Annual Subscription fee 100/- 3rd September 2015

ओ३म्

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य समाज चौदरगुड़ा ने श्रावण मास के उपलक्ष में

बृहद् यज्ञ का आयोजन कर 500 पौधों को लगाया

यज्ञ और पौधा जीवन का अमूल्य अंग

महायज्ञों का आयोजन कर हजारों की संख्या में पौधों को लगाने का प्रधान सभा ने आह्वान किया

सभा उप प्रधान श्री लक्ष्मण सिंह जी पूर्व मंत्री श्री शंकरराव जी के साथ पौधा लगाते हुए । साथ में सभा प्रधान विठ्ठलराव जी आर्य, श्री गुरुनारायण जी व मंत्री आर्य समाज चौदरगुड़ा श्री सुधाकर राव जी देखें जा सकते हैं

पेड़ पौधा जीवन का अमूल्य अंग है । ग्लोबल वार्मिंग के परिप्रेक्ष में पेड़ पौधों को लगाकर दिन प्रतिदिन तापमान को, दूषित वायु और अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि से धरति को बचाया जा सकता है । आने वाले दिनों में प्राण वायु के संकट को टालने के लिए पेड़ पौधों को लगाने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है । ऋषि मुनियों द्वारा प्रतिपादित यज्ञ या अग्नि की प्रक्रिया, पेड़ पौधों को बढ़ाने में सहायक हो सकती है । इसीलिए लाखों-लाखों की संख्या में, यज्ञ के आयोजन के साथ-साथ पेड़ पौधों को लगाने के आंदोलन को छोटे-बड़े सभी आर्य समाजी अपना कर्तव्य समझे । जंगल के बिना जीवन दूभर है । आइए परमात्मा के नाम पर संकल्प करे कि पौधा लगाऐंगे और लगवायेंगे उसका पोषण करेंगे और पेड़ में बदलेंगे । अपने लिए तथा भावी पीड़ी के लिए यह हम सभी का परम पवित्र कर्तव्य हैं ।

सभा पुस्तकाध्यक्ष श्री गुरुनारायणजी, चौदरगुड़ा आर्य समाज के विशाल प्रांगण में पौधा लगाते हुए ।साथ में समाज और सभा के अधिकारियों को तथा कार्यकर्ताओं को देखा जा सकता है ।

श्रावण मास में आर्य समाज चौदरगुड़ा की ओर से आयोजित महायज्ञ और पौधा लगाने वाले कार्यक्रम में सैकड़ो की संख्या में विद्यार्थियों ने भाग लिया, पौधा लगाते हुए विद्यार्थियों के साथ सभा प्रधान श्री विट्ठलराव जी आर्य

पौधा लगाएं जीवन बचाएं

पूर्व मंत्री श्री शंकर रावजी पौधा लगाते हुए साथ में आर्य समाज के अन्य अधिकारी व कार्यकता

पौधा लगाना
परमात्मा की उपासना का प्रतीक
यज्ञ व
वर्षा का सहायक

विद्यार्थियों के साथ मिलकर पौधा लगाते हुए सभा प्रधानजी

अमृतसर के
आर्य समाज मंदिर
में
सभा प्रधान
श्री विट्ठलराव जी आर्य
पौधा लगाते हुए
आर्य समाज के मंत्री
श्री विजय जी साथ में व
आर्य समाज के अन्य
अधिकारी व महिला
कार्यकता

अमृतसर के
स्वर्ण मंदिर
में
सभा प्रधान
श्री विट्ठलराव
जी आर्य
श्री विजय जी
के साथ

अमृतसर के
आर्य समाज मंदिर
में
सभा प्रधान
श्री विट्ठलराव जी आर्य
पौधा लगाते हुए
साथ में आर्य समाज के
अन्य अधिकारी व महिला
कार्यकता

'वर्तमान षिक्षा में समग्र वैदिक विचारधारा को सम्मिलित करना सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास और देषोन्नति के लिए आवष्यक'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

सभी नागरिकों, नेताओं व सुधी जनों का कर्तव्य हैं कि वह देश की अधिक से अधिक उन्नति पर विचार करें और अच्छे–अच्छे सुझाव समाज व देश को दें। देश में जो लोग व शक्तियां देश व सर्वहितकारी विचारों व योजनाओं का किसी भी कारण से विरोध करें, देश की शिक्षित प्रजा को मत–सम्प्रदाय–पन्थ आदि से ऊपर उठकर सामूहिक रूप से असरदार विरोध करना चाहिये जिससे उनकी हिम्मत पस्त हो जाये। देश की सभी समस्याओं का हल और उन्नति का मूल मन्त्र क्या है? इसका उत्तर बहुत सरल है और वह यह है कि देश के सभी लोगों के लिए एक समान व सत्य मूल्यों पर आधारित ऐसी शिक्षा जिससे देश के सभी मनुष्यों का पूर्ण बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक विकास हो। अविद्या का नाम व विद्या की वृद्धि होनी चाहिये। यह सिद्धान्त धर्म, ज्ञान व विज्ञान के सभी क्षेत्रों पर लागू होता है। अत्यधिक स्वतन्त्रता व इसके नाम पर कुछ भी करने की छूट किसी को नहीं होनी चाहिये। हर कार्य मर्यादित हो और उसकी उपेक्षा व उल्लघंन दण्डनीय हो। यदि ऐसा होता है तो हमें सच्चरित्र, देश भक्त व समाज का सुधार करने की भावना रखने वाले बड़ी संख्या में युवक व युवतियां मिल सकती हैं जिससे देश की तस्वीर बदल सकती है। इसके साथ ही आजकल समाज में धर्म के नाम पर जो व्यापार व दुश्चरित्रता की घटनायें घट रही हैं एवं भोले–भाले लोगों का शोषण हो रहा है, उसको नियन्त्रित करने में भी सहायता मिल सकती है। यदि अन्धविश्वास व मिथ्या मान्यताओं के मकड़जाल की वर्तमान स्थिति को निर्मूल नहीं किया गया तो यह देश के भविष्य के लिए घातक हो सकती है।

शिक्षा क्या होती है? शिक्षा हमारी बुद्धि का परिष्कार करने वाली व उसको शोभा प्रदान करने वाली ज्ञान से युक्त एक ऐसी ओषधि है जिससे मनुष्य का जीवन अज्ञान व अविद्या के रोग से मुक्त रहता है व जीवन के उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति में सफल होता है। वेद ज्ञान रहित शिक्षा मनुष्य के जीवन का सर्वांगीण विकास करने में असफल है यह हमने विगत अनुभवों से देखा है। मर्यादा पुरूषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण, आचार्य चाणक्य व महर्षि दयानन्द पर दृष्टि डालने पर यह तथ्य प्रकट होता है कि इनका निर्माण वैदिक शिक्षा द्वारा ही हुआ था। वैदिक शिक्षा की महत्ता यह है कि इससे मनुष्य को अपने जन्म के कारणों व उद्देश्य का पता चलता है जो कि अन्य किसी भी शिक्षा पद्धति से सम्भव नहीं है। वैदिक शिक्षा पद्धति से शिक्षित व दीक्षित बालक व विद्यार्थी मानव बनता है, दानव नहीं। दानव शब्द का अर्थ गलत व बुरे काम करने वाला मनुष्य कर सकते हैं। यदि वैदिक शिक्षा में शिक्षित व्यक्ति भी कोई गलत काम करता है तो यह उसके अपने अत्यन्त बुरे संस्कारों, सामाजिक वातावरण व पढ़ाने वाले अध्यापकों की अध्यापन क्षमता में त्रुटि व कमी के कारण होता है। हम यहां एक आर्य संन्यासी के जीवन का एक उदाहरण देते हैं। यह स्वामीजी गुरूकुल खोलने के लिए भूमि की तलाश में किसी ग्राम में आकर किसी मैदान के बडे वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे। वहां के भूस्वामी एक जमींदार अपने घोड़े पर आते हैं और स्वामीजी से प्रश्नोत्तर करते हैं। स्वामीजी ईश्वर भक्त थे, अतः क्रोधी व अहंकारी कोटि के मनुष्यों से उन्हें कोई भय नहीं था। दूसरी ओर यह जमींदार क्रोधी व अंहकारी प्रवृत्ति के थे। स्वामीजी ने उसका व्यवहार देखा तो उसकी उपेक्षा की और उसे फटकार दिया। आग बबूला होकर वह घर लौटा। पत्नी ने उनकी दशा देखी तो कारण पूछा? कारण जानकर उस देवी ने कहा कि जीवन में अभी तक आपको कोई दिव्य पुरूष नहीं मिला जिसके कारण आपके स्वभाव में क्रोध व अहंकार आदि अवगुण विद्यमान हैं। जिस व्यक्ति ने आपको फटकारा है वह कोई साधारण मनुष्य नहीं हो सकता। जाईये, उनसे क्षमा याचना कर उनकी योग्य सेवा पूछिये? पत्नी की सलाह उन्हें ठीक लगी और वह स्वामीजी के पास आकर अपने कृत्य पर क्षमाप्रार्थी हुए। उसी व्यक्ति ने स्वामी जी को सैकड़ों बीघा भूमि दान की जहां बाद में एक गुरूकुल बना। ऐसी ही एक घटना में एक जमीदार श्री अमन सिंह ने कांगड़ी ग्राम की अपनी 1400 बीघा जमीन महात्मा मुंशी राम, बाद में स्वामी श्रद्धानन्द, को गुरूकुल कांगड़ी के निर्माण के लिए निःशुल्क प्रदान की थी। मनुष्य के जीवन में ऐसा सात्विक परिवर्तन वैदिक विचारों व संस्कारों के उद्भव से ही होता है। यह तो एक घटना का प्रभाव है। यदि पूरे वेद की शिक्षायें किसी मनुष्य को प्राप्त हो जायें तो वह वैदिक विद्वान व ऋषि कोटि का आप्त पुरूष बन सकता

है, जो ईश्वर के बाद सबका पूजनीय होता है। वैदिक शिक्षा की एक विशेषता यह है कि इसमें सत्य पर अधिक बल दिया जाता है। बालक व विद्यार्थी के जीवन से उसके दुर्गुणों व दुर्व्यस्नों को दूर करने के लाभ व हानियों से परिचय कराया जाता है। प्रातः 4 बजे उठकर शौच, वायुसेवन व व्यायाम से आरम्भ कर ईश्वर का ध्यान–संध्या–उपासना, तदन्तर अग्निहोत्र–यज्ञ व दिन में सभी आवश्यक विषयों का अध्ययन कराया जाता है। सन्ध्या व ध्यान इसलिये किया जाता है कि हमारे दुष्ट दुर्गुण हमसे दूर होकर ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव हमारे जीवन में प्रविष्ट हों। ऐसा व्यक्ति ही महात्मा, सज्जन, धर्मात्मा, विद्वान व पूजनीय कहलाता है। गुरूकुल व वैदिक शिक्षा का विद्यार्थी शुद्ध शाकाहारी भोजन जिसमें गोदुग्ध व फल आदि भी होते हैं, ही करता है। आज हम समाज में पढ़े लिखे लोगों द्वारा असत्य व्यवहार यथा दुष्टता, अनाचार, दुराचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार आदि के अनेक उदाहरण देखते हैं। इसका कारण केवल बाल्यावस्था में बच्चाचें को वैदिक संस्कारों का न दिया जाना है। जितने दोषी ऐसे बुरे कार्य करने वाले व्यक्ति होते हैं, उतना ही दोष इनकी शिक्षा प्रणाली का है। यह ऐसा ही है कि कोई किसी अविद्वान से अध्ययन कर विद्वान बनना चाहे। शिक्षा एकांगी न होकर सर्वांगीण होनी चाहिये। हमें वर्तमान शिक्षा एंकागी लगती है और वर्तमान शिक्षा और वैदिक शिक्षा का समन्वित रूप ही सर्वांगीण प्रतीत होता है। यदि वैदिक शिक्षा में कोई त्रुटि या कमी होती तो इसके द्वारा राम, कृष्ण, दयानन्द, चाणक्य जैसे देवता और माता सीता, रूकमणी, गार्गी, सती अनुसूया जैसी देवियों का निर्माण न हुआ होता। आधुनिक काल में भी हम स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, महात्मा हंसराज, पं. चमूपति, स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, स्वामी सर्वानन्द, पं. बुद्धदेव मीरपुरी, पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ, डा. रामनाथ वेदालंकार आदि विद्वानों को देखते हैं तो हमें वैदिक शिक्षा का महत्व पता चलता है। इन लोगों ने वैदिक संस्कारों को प्राप्त कर देश व जाति के सुधार व निर्माण के जो कार्य किये हैं, उनसे देश की उन्नति व विद्या के प्रचार प्रसार में बहुत योगदान किया है।

वैदिक शिक्षा के अध्ययन व पाठ्यक्रम पर महर्षि दयानन्द ने अपने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में प्रकाश डाला है। वर्तमान शिक्षा के साथ उसका सामंजस्य कर उसका समावेश वर्तमान सरकारी व प्राइवेट विद्यालयों की शिक्षा में होना चाहिये। वैदिक शिक्षा की एक विशेष देन ईश्वरोपासना है। यह ईश्वरोपासना एक ऐसी साधना है कि जिसमें ईश्वर के समस्त गुणों का चिन्तन कर स्तुति की जाति है। संसार के सभी गुणों की पराकाष्ठा ईश्वर में है। ईश्वरोपासना से ईश्वर के सभी गुण उपासना करने वाले मनुष्य के जीवन में स्वतः आना आरम्भ हो जाते हैं। स्तुति–प्रार्थना–उपासना का अर्थ ही ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव का वेद एवं वैदिक साहित्य के आधार पर विचार कर उसे अपने जीवन में धारण करना है। जो व्यक्ति उपासना तो करते हैं परन्तु उनमें ईश्वर के श्रेष्ठ गुणों का समावेश नहीं होता उनकी उपासना दिखावा मात्र होती है। महर्षि मनु ने ऐसे मनुष्यों को श्रेष्ठ मनुष्यों के समूह से पष्थक कर उन्हें निम्न व्यक्तियों के समूह में रखने का विधान किया हुआ है। वैदिक शिक्षा का एक अनिवार्य विषय आर्ष संस्कष्त का ज्ञान है। देश बालक हिन्दी व अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषायें पढ़ सकते हैं तो वह ईश्वर प्रदत्त व विश्व की सभी भाषाओं की जननी वैदिक संस्कष्त को भी अवश्य पढ़ सकते हैं। इसका विरोध धर्मान्ध व्यक्ति ही कर सकते हैं। संस्कष्त का ज्ञान जीवन को सफल बनाने के लिए अति आवश्यक है। अतः देश भर में इसका प्रचार व अनिवार्यता होनी चाहिये तभी शिक्षा से शुभ परिणाम हमारे सामने आयेंगे। यदि संस्कष्त नहीं पढ़ेगें तो देश का वेद व विशाल वैदिक साहित्य अनुपयोगी हो जायेगा जिसकी रचना हमारे सभी पूर्वजों ने हमारे हित को ध्यान में रखकर की थी। इससे हम सब अपने पूर्वजों के कष्तघ्न होंगे। इस पर ध्यान दिया जाना चाहिये। इस कार्य की अपेक्षा वर्तमान में किसी भी विचारधारा वाली सरकार से नहीं की जा सकती। सबके अपने अपने पूर्वाग्रह हैं। आर्य समाज गुरूकुलों के माध्यम से यथाशक्ति यह कार्य कर रहा है जो कि प्रशंसनीय है।

वैदिक शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य मनुष्य का चरित्र निर्माण है। जो व्यक्ति जीवन में बुरे काम करता है वह अपने माता–पिता, आचार्य व कुल को दूषित करता है। ऐसी सन्तानें प्रशस्य न होकर निन्दनीय होती हैं। आजकल तो ऐसे दूषित कार्य साधारण लोग नहीं अपितु धर्मात्मा व महात्मा कहलाने वाले लोग कर रहे हैं। ऐसा वर्तमान शिक्षा, सामाजिक वातावरण, विदेशी मूल्यों व मान्यताओं को प्राथमिकता तथा कुछ अन्य कारणों से है। इन कारणों को दूर करने का एक ही उपाय वैदिक शिक्षा का वर्तमान शिक्षा में पूर्ण समावेश करने का हमने उपर्युक्त पंक्तियों में दिया है। ऐसा करके मनुष्यों के चरित्र निर्माण सहित देशोन्नति का लक्ष्य तो प्राप्त होगा ही, साथ हि मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य धर्म–अर्थ–काम व मोक्ष को भी प्राप्त करने में आगे बढ़ेगा। इन्हीं पंक्तियों के साथ हम लेख को विराम देते हैं।

स्वामी दयानन्द और हिन्दी'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

भारतवर्ष के इतिहास में महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने पराधीन भारत में सबसे पहले राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए हिन्दी को सर्वाधिक महत्वपूर्ण जानकर मन, वचन व कर्म से इसका प्रचार–प्रसार किया। उनके प्रयासों का ही परिणाम था कि हिन्दी शीघ्र लोकप्रिय हो गई। यह ज्ञातव्य है कि हिन्दी को स्वामी दयानन्द जी ने आर्यभाषा का नाम दिया था। स्वतन्त्र भारत में 14 सितम्बर 1949 को सर्वसम्मति से हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया जाना भी स्वामी दयानन्द के इससे 77 वर्ष पूर्व आरम्भ किए गये कार्यों का ही सुपरिणाम था। प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार विष्णु प्रभाकर हमारे राष्ट्रीय जीवन के अनेक पहलुओं पर स्वामी दयानन्द का अक्षुण प्रभाव स्वीकार करते हैं और हिन्दी पर साम्राज्यवादी होने के आरोपों को अस्वीकार करते हुए कहते हैं कि यदि साम्राज्यवाद शब्द का हिन्दी वालों पर कुछ प्रभाव है भी, तो उसका सारा दोष अहिन्दी भाषियों का है। इन अहिन्दीभाषियों का अग्रणीय वह स्वामी दयानन्द को मानते हैं और लिखते हैं कि इसके लिए उन्हें प्रेरित भी किसी हिन्दी भाषी ने नहीं अपितु एक बंगाली सज्जन श्री केशवचन्द्र सेन ने किया था।

स्वामी दयानन्द का जन्म 12 फरवरी, 1825 में गुजरात राज्य के राजकोट जनपद में होने के कारण गुजराती उनकी स्वाभाविक रूप से मातष्भाषा थी। उनका अध्ययन–अध्यापन संस्कष्त में हुआ था, इसी कारण वह संस्कष्त में ही वार्तालाप, व्याख्यान, लेखन, शास्त्रार्थ तथा शंका–समाधान आदि किया करते थे। 16 दिसम्बर, 1872 को स्वामी जी वैदिक मान्यताओं के प्रचारार्थ भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता पहुंचे थे और वहां उन्होंने अनेक सभाओं में व्याख्यान दिये। ऐसी ही एक सभा में स्वामी दयानन्द के संस्कष्त भाषण का बंगला में अनुवाद गवर्नमेन्ट संस्कष्त कालेज, कलकत्ता के उपाचार्य पं. महेश चन्द्र न्यायरत्न कर रहे थे। अनुवाद ने अनेक स्थानों पर स्वामी जी के व्याख्यान को अनुदित न कर उसमें अपनी विपरीत मान्यताओं को श्री न्यायरत्न ने प्रकट किया जिससे संस्कष्त कालेज के श्रोताओं ने उनका विरोघ किया। विरोध के कारण श्री न्यायरत्न बीच में ही सभा छोड़कर चले गये थे। बाद में स्वामी दयानन्द जी को श्री केशवचन्द्र सेन ने सुझाव दिया कि वह संस्कष्त के स्थान पर हिन्दी को अपनायें। स्वामी दयानन्द जी ने तत्काल यह सुझाव स्वीकार कर लिया। यह दिन हिन्दी के इतिहास की एक प्रमुख घटना थी कि जब एक 47 वर्षीय गुजराती मातष्भाषा के संस्कष्त के विश्वविख्यात वैदिक विद्वान स्वामी दयानन्द ने तत्काल हिन्दी को अपना लिया। ऐसा दूसरा उदाहरण इतिहास में अनुपलब्ध है। इसके पश्चात स्वामी दयानन्द जी ने जो प्रवचन किए उनमें वह हिन्दी का प्रयोग करने लगे।

सत्यार्थ प्रकाश स्वामी जी की विश्व प्रसिद्ध रचना और पूर्ण वैज्ञानिक अर्थात् तर्क, युक्ति व प्रमाणयुक्त धर्म ग्रन्थ है जो देश–विदेश में विगत 141 वर्षों से उत्सुकता एवं श्रद्धा से पढ़ा जाता है। फरवरी, 1872 में हिन्दी को अपने व्याख्यानों व ग्रन्थों के लेखन की भाषा के रूप में स्वीकार करने के लगभग 2 वर्ष पश्चात ही स्वामी जी ने 2 जून 1874 को उदयपुर में इस सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के प्रथम आदिम सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन आरम्भ किया और लगभग 3 महीनों में पूरा कर डाला। श्री विष्णु प्रभाकर इतने अल्प समय में स्वामी जी द्वारा हिन्दी में सत्यार्थ प्रकाश जैसा उच्च कोटि का ग्रन्थ लिखने पर इसे आश्चर्यजनक घटना मानते हैं। सत्यार्थ प्रकाश के पश्चात स्वामी जी ने अनेक ग्रन्थ लिखे जो सभी हिन्दी में हैं। उनके ग्रन्थ उनके जीवन काल में ही देश की सीमा पार कर विदेशों में भी लोकप्रिय हुए। विश्व विख्यात विद्वान प्रो. मैक्समूलर ने स्वामी दयानन्द की पुस्तक ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा कि वैदिक साहित्य का आरम्भ ऋग्वेद से एवं अन्त स्वामी दयानन्द जी की ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पर होता है। प्रो. मैक्समूलर की स्वामी दयान्द को यह प्रशस्ति उनके वेद विषयक ज्ञान, उनके कार्यों, वेदों के प्रचार–प्रसार के प्रति योगदान एवं उनके गौरव के अनुरूप है। स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य ग्रन्थों को इस बात का गौरव प्राप्त है कि धर्म, दर्शन एवं संस्कषति जैसे क्लिष्ट व विशिष्ट विषय को सर्वप्रथम उनके द्वारा हिन्दी में प्रस्तुत कर उसे सर्व जन सुलभ किया गया जबकि इससे पूर्व इस पर संस्कष्त निष्णात ब्राह्मण वर्ग का ही एकाधिकार था जिसमें इन्हें संकीर्ण एवं संकुचित कर दिया था और वेदों का लाभ जनसाधारण को नहीं मिल सका जिसके वह अधिकारी थे।

थियोसोफिकल सोसायटी की नेत्री मैडम बैलेवेटेस्की ने स्वामी दयानन्द से उनके हिन्दी में लिखित ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद की अनुमति मांगी तो स्वामी दयानन्द जी ने उन्हें 31 जुलाई, 1879 को विस्तष्त पत्र लिख कर अनुवाद से हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं प्रगति में आने वाली बाधाओं से परिचित कराया। स्वामी जी ने लिखा कि अंग्रेजी अनुवाद सुलभ होने पर देश–विदेश में जो लोग उनके ग्रन्थों को समझने के लिए संस्कष्त व हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं, वह समाप्त हो जायेगा। हिन्दी के इतिहास में शायद कोई विरला ही व्यक्ति होगा जिसने अपनी हिन्दी पुस्तकों का अनुवाद इसलिए नहीं होने दिया जिससे अनुदित पुस्तक के पाठक हिन्दी सीखने से विरत होकर हिन्दी प्रसार में बाधक बनेंगे।

हरिद्वार में एक बार व्याख्यान देते समय पंजाब के एक श्रद्धालु भक्त द्वारा स्वामी जी से उनकी पुस्तकों का उर्दू अनुवाद कराने की प्रार्थना करने पर उन्होंने आवेशपूर्ण शब्दों में कहा था कि अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करता है। देवनागरी के अक्षर सरल होने से थोड़े ही दिनों में सीखे जा सकते हैं। हिन्दी भाषा भी सरल होने से सीखी जा सकती है। हिन्दी न

जानने वाले एवं इसे सीखने का प्रयत्न न करने वालों से उन्होंने पूछा कि जो व्यक्ति इस देश में उत्पन्न होकर यहां की भाषा हिन्दी को सीखने में परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है? श्रोताओं को सम्बोधित कर उन्होंने कहा, ''आप तो मुझे अनुवाद की सम्मति देते हैं परन्तु दयानन्द के नेत्र वह दिन देखना चाहते हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी और अटक से कटक तक देवनागरी अक्षरों का प्रचार होगा।'' इस स्वर्णिम स्वप्न के द्रष्टा स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में एक स्थान पर लिखा कि आर्यावर्त्त (भारत वर्ष का प्राचीन नाम) भर में भाषा का एक्य सम्पादन करने के लिए ही उन्होंने अपने सभी ग्रन्थों को आर्य भाषा (हिन्दी) में लिखा एवं प्रकाशित किया है। अनुवाद के सम्बन्ध में अपने हृदय में हिन्दी के प्रति सम्पूर्ण प्रेम को प्रकट करते हुए वह कहते हैं, ''जिन्हें सचमुच मेरे भावों को जानने की इच्छा होगी, वह इस आर्यभाषा को सीखना अपना कर्तव्य समझेंगे।'' यही नहीं आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए उन्होंने हिन्दी सीखना अनिवार्य किया था। भारत वर्ष की तत्कालीन अन्य संस्थाओं में हम ऐसी कोई संस्था नहीं पाते जहां एकमात्र हिन्दी के प्रयोग की बाध्यता हो।

सन् 1882 में ब्रिटिश सरकार ने डा. हण्टर की अध्यक्षता में एक कमीशन की स्थापना कर उससे राजकार्य के लिए उपयुक्त भाषा की सिफारिश करने को कहा। यह आयोग हण्टर कमीशन के नाम से जाना गया। यद्यपि उन दिनों सरकारी कामकाज में उर्दू–फारसी एवं अंग्रेजी का प्रयोग होता था परन्तु स्वामी दयानन्द के सन् 1872 से 1882 तक व्याख्यानों, ग्रन्थों, शास्त्रार्थों तथा आर्य समाजों द्वारा वेद प्रचार एवं उसके अनुयायियों की हिन्दी निष्ठा से हिन्दी भी सर्वत्र लोकप्रिय हो गई थी। इस हण्टर कमीशन के माध्यम से हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिलाने के लिए स्वाामी जी ने देश की सभी आर्य समाजों को पत्र लिखकर बड़ी संख्या में हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन इण्टर कमीशन को भेजने की प्रेरणा की और जहां से ज्ञापन नहीं भेजे गये उन्हें स्मरण पत्र भेज कर सावधान और पुनः प्रेरित किया। आर्य समाज फर्रूखाबाद के स्तम्भ बाबू दुर्गादास को भेजे पत्र में स्वामी जी ने लिखा, ''यह काम एक के करने का नहीं है और अवसर चूके यह अवसर आना दुर्लभ है। जो यह कार्य सिद्ध हुआ (अर्थात् हिन्दी राजभाषा बना दी गई) तो आशा है, मुख्य सुधार की नींव पड़ जावेगी।'' स्वामी जी की प्रेरणा के परिणामस्वरुप देश के कोने–कोने से आयोग को बड़ी संख्या में लोगों ने हस्ताक्षर कराकर ज्ञापन भेजे। कानपुर से हण्टर कमीशन को दो सौ मैमोरियल भेज गए जिन पर दो लाख लोगों ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में हस्ताक्षर किए थे। हिन्दी को गौरव प्रदान करने के लिए स्वामी दयानन्द द्वारा किया गया यह कार्य भी इतिहास की अन्यतम घटना है। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से जिन प्रमुख लोगों ने हिन्दी सीखी उनमें जहां अनेक रियासतों के राज परिवारों के सदस्य हैं वहीं कर्नल एच. ओ. अल्काट आदि विदेशी महानुभाव भी हैं जो इंग्लैण्ड में स्वामी जी की प्रशंसा सुनकर उनसे मिलने भारत आये थे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि शाहपुरा, उदयपुर, जोधपुर आदि अनेक स्वतन्त्र रियासतों के महाराजा स्वामी दयानन्द के अनुयायी थे और स्वामी जी की प्रेरणा पर उन्होंने अपनी रियासतों में हिन्दी को राज भाषा का दर्जा दिया था। स्वामी दयानन्द संस्कष्त व हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के जानने व पढ़ने के पक्षधर भी थे, विरोधी किसी भाषा के नहीं थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि जब पुत्र–पुत्रियों की आयु पांच वर्ष हो जाये तो उन्हें देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें, अन्यदेशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। एक अन्य प्रकरण में आदिम सत्यार्थ प्रकाश में मूर्तिपूजा के इतिहास से परिचय कराने के साथ इस मूर्तिपूजा से आयी गुलामी के प्रसंग में अन्यदेशीय भाषाओं के अध्ययन के समर्थन में उन्होंने विस्तार से लिखा है। यह पूरा प्रसंग इसकी महत्ता के कारण प्रस्तुत है। वह लिखते है कि 'न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि। हस्तिना ताड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैनमन्दिरम्।।1।।' इत्यादि श्लोक (हमारे मूर्तिपूजक बन्धुओं ने) बनाए हैं कि मुसलमानों की भाषा बोलनी और सुननी भी नहीं चाहिए और यदि पागल हाथी मूर्तिपूजक सनातनी के पीछे मारने को दौड़े, तो यदि वह किसी जैन मन्दिर में जाने से बच सकता हो, तो भी जैन के मन्दिर में न जायें किन्तु हाथी के सन्मुख मर जाना उससे (अर्थात् जैन मन्दिर में जाने से) अच्छा है, ऐसे निन्दा के श्लोक बनाए हैं। सो पुजारी, पण्डित और सम्प्रदायी लोगों ने चाहा कि इनके खण्डन के विना हमारी आजिविका न बनेगी। यह केवल उनका मिथ्याचार है। मुसलमानों की भाषा पढ़ने में अथवा कोई देश की भाषा पढ़ने में कुछ दोष नहीं होता, किन्तु कुछ गुण ही होता है। 'अपशब्दज्ञानपूर्वके शब्दज्ञाने धर्मः।' यह व्याकरण महाभाष्य (आन्हिक 1) का वचन है। इसका यह अभिप्राय है कि अपशब्द ज्ञान अवश्य करना चाहिए, अर्थात् सब देश देशान्तर की भाषा को पढ़ना चाहिए, क्योंकि उनके पढ़ने से बहुत व्यवहारों का उपकार होता है और संस्कष्त शब्द के ज्ञान का भी उनको यथावत् बोध होता है। जितनी देशों की भाषायें जानें, उतना ही पुरुष को अधिक ज्ञान होता है, क्योंकि संस्कष्त के शब्द बिगड़ के सब देश भाषायें होती वा बनती हैं, इससे इनके ज्ञानों से परस्पर संस्कष्त और भाषा के ज्ञान में उपकार ही होता है। इसी हेतु महाभाष्य में लिखा कि अपशब्द–ज्ञानपूर्वक शब्दज्ञान में धर्म होता है अन्यथा नहीं। क्योंकि जिस पदार्थ का संस्कष्त शब्द जानेगा और उसके भाषा शब्द को न जानेगा तो उसको यथावत् पदार्थ का बोध और व्यवहार भी नहीं कर सकेगा। तथा महाभारत में लिखा है कि युधिष्ठिर और विदुर आदि अरबी आदि देश भाषा को जानते थे। इस लिए जब युधिष्ठिर आदि लाक्षा गष्ह की ओर चले, तब विदुर जी ने युधिष्ठिर जी को अरबी भाषा में समझाया और युधिष्ठिर जी ने अरबी भाषा से प्रत्युत्तर दिया, यथावत् उसको समझ लिया। तथा राजसूय और अश्वमेध यज्ञ में देश–देशान्तर तथा द्वीप–द्वीपान्तर के राजा और प्रजास्थ पुरुष आए थे। उनका परस्पर अनेक देश भाषाओं में व्यवहार होता था तथा द्वीप–द्वीपान्तर में यहां के प्रजाजन जाते थे और वहां के इस देश में आते थे फिर जो

देश–देशान्तर की भाषा न जानते तो उनका व्यवहार सिद्ध कैसे होता? इससे क्या आया कि देश–देशान्तर की भाषा के पढ़ने और जानने में कुछ दोष नहीं, किन्तु बड़ा उपकार ही होता है। विश्व की सभी भाषाओं के अध्ययन के पक्षध ार स्वामी दयानन्द देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं को हिन्दी व संस्कष्त की भांति देवनागरी लिपि में लिखे जाने के समर्थक थे जो राष्ट्रीय एकता की पूरक होती। उन्होंने एक प्रसंग में यह भी कहा था कि दयानन्द की आंखे वह दिन देखना चाहती हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश में चहुंओर देवनागरी अक्षरों का प्रचार व प्रयोग हो, इसका उल्लेख पूर्व भी कर चुके हैं। अपने जीवन काल में स्वामी ने हिन्दी पत्रकारिता को भी नई दिशा दी। आर्य दर्पण (शाहजहांपुर : 1878), आर्य समाचार (मेरठ : 1878), भारत सुदशा प्रवर्तक (फर्रूखाबाद : 1879), देश हितैषी (अजमेर : 1882) आदि अनेक हिन्दी पत्र आपकी प्रेरणा से प्रकाशित हुए एवं पत्रों की संख्या में उत्तरोत्तर वष्द्धि होती गई।

स्वामी दयानन्द ने हिन्दी में जो पत्रव्यवहार किया वह भी संख्या की दष्ष्टि से किसी एक धार्मिक विद्वान व नेता द्वारा किए गए पत्रव्यवहार में आज भी सर्वाधिक है। स्वामी जी के पत्र. व्यवहार की खोज, उनकी उपलब्धि ा एवं सम्पादन कार्य में रक्तसाक्षी पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, रिसर्च स्कालर पं. भगवद्दत्त, पं. युधिष्ठिर मीमांसक एवं श्री मामचन्द जी का विशेष योगदान रहा। शायद ही स्वामी दयानन्द से पूर्व किसी धार्मिक नेता के पत्रों की ऐसी खोज कर उन्हें क्रमवार सम्पादित कर पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया हो और जीवन चरित्र आदि के सम्पादन में इन पत्रों से सहायता ली गई हो। स्वामी जी का समस्त पत्रव्यवहार चार खण्डों में पं. युधिष्ठिर मीमांसक के सम्पादकत्व में प्रकाशित है जो वैदिक साहित्य के प्रमुख प्रकाशक मैसर्स श्रीरामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली (हरयाण) से उपलब्ध है। इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसका एक अद्यतन संशोधित संस्करण परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है जिसका सम्पादन आर्यजगत के विख्यात विद्वान डा. वेदपाल जी ने किया है और इसके शुद्ध व निर्दोष रूप में प्रकाशित किये जाने में आर्य विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी, अबोहर की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। यह भी ज्ञातव्य है कि स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने सर्वप्रथम अपनी आत्म–कथा लिखी। इस आत्म–कथा के हिन्दी में होने के कारण हिन्दी को ही इस बात का गौरव है कि आत्म–कथा साहित्य का शुभारम्भ हिन्दी व स्वामी दयानन्द से हुआ। सष्ष्टि के आरम्भ में ईश्वर से वेदों के द्वारा ज्ञान की उत्पत्ति हुई थी। स्वामी दयानन्द के समय तक वेदों का भाष्य–व्याख्यायें–प्रवचन–लेखन–शास्त्रार्थ आदि संस्कष्त में ही होता आया था। स्वामी जी पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने वेदों का भाष्य जन–सामान्य की भाषा संस्कष्त सहित हिन्दी में करके सष्ष्टि के आरम्भ से प्रवाहित धारा को उलट दिया। यह घटना जहां वैदिक धर्म व संस्कषति की रक्षा से जुड़ी है, वहीं भारत की एकता व अखण्डता से भी जुड़ी है। न केवल वेदों का ही उन्होंने हिन्दी में भाष्य किया अपितु मनुस्मषति एवं अन्य शास्त्रीय ग्रन्थों का अपनी पुस्तकों में उल्लेख करते समय उद्धरणों के हिन्दी में अर्थ भी किए हैं। वेदों का हिन्दी में भाष्य करके उन्होंने पौराणिक हिंन्दू समाज से ब्राह्मणों के शास्त्राध ययन पर एकाधिकार को भी समाप्त कर जन–जन को इसका अधिकारी बनाया। यह कोई छोटी बात नहीं अपितु बहुत बड़ी बात है जिसका मूल्याकंन नहीं किया जा सकता। महर्षि दयानन्द के प्रयासों से ही आज वेद एवं समस्त शास्त्रों का अध्ययन हिन्दू व इतर समाज की किसी भी जन्मना जाति, मत व सम्प्रदाय का व्यक्ति कर सकता है। आर्यसमाज ने उन सबके लिए वेदाध्ययन व अपने गुरुकुलों के दरवाजे खोले हुए हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा हिन्दी को लोकप्रिय बनाकर उसे राष्ट्र भाषा के गौरवपूर्ण स्थान तक पहुंचाने में उनके साथ ही उनके द्वारा स्थापित आर्य समाजों एवं उनकी प्रेरणा से उनके अनुयायियों द्वारा स्थापित बड़ी संख्या में गुरूकुलों, डी.ए.वी. कालेजों व अनेक आर्य संस्थाओं आदि का भी योगदान है। एक शताब्दी से अधिक समय पूर्व गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में देश में सर्वप्रथम विज्ञान, गणित सहित सभी विषयों की पुस्तकें हिन्दी माध्यम से तैयार कर उनका सफल अध्ययन–अध यापन किया कराया गया। इस्लाम की धर्म–पुस्तक कुरआन को हिन्दी में सबसे पहले अनुदित कराने का श्रेय भी स्वामी दयानन्द जी को है। यह अनुदित ग्रन्थ उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकरिणी सभा, अजमेर के पुस्तकालय में आज भी सुरक्षित है।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि जो व्यक्ति जिस देश भाषा को पढ़ता है उसको उसी भाषा व उसके साहित्य का संस्कार होता है। अंग्रेजी व अन्यदेशीय भाषायें पढ़ा व्यक्ति मानवीय मूल्यों पर आधारित भारतीय संस्कषति से सर्वथा दूर पाश्चात्य एवं वाममार्गी आदि भिन्न भिन्न जीवन शैलियों के अनुसार जीवन यापन करता है। यह जीवन पद्धतियां उच्च मर्यादाओं की दष्ष्टि से भारतीय संस्कषति से निम्नतर हैं। यदि वह संस्कष्त व हिन्दी दोनों को पढ़ते और विवेक से निश्चय करते तो अवश्य ही वैदिक मर्यादाओं का पालन करते। कुछ ऐसी जीवन शैलियां है जिनमें पशुओं पर दया के स्थान पर उनको भोजन में सम्मलित किया गया है, हो सर्वसम्मत अंहिसा का नहीं अपितु हिंसा का उदाहरण है। जीवन में हिंसा का किसी भी रूप में प्रयोग अपसंस्कषति है और अंहिसा ही संस्कषति है। अतः स्वामी जी का यह निष्कर्ष भी उचित है कि हिन्दी व संस्कष्त को प्रवष्त्त कर ही प्राचीन संस्कषति, सभ्यता, साहित्य, इतिहास व मानवीय मूल्यों की रक्षा की जा सकती है। एक षडयन्त्र के अन्तर्गत विष देकर दीपावली 1883 के दिन स्वामी दयानन्द की जीवन लीला समाप्त कर दी गई। यदि स्वामी जी कुछ वर्ष और जीवित रहे होते तो हिन्दी को और अधिक समृद्ध करते और इसका व्यापक प्रचार करते तथा तीव्र वेद प्रचार आदि कार्यों से देश की अधिक उन्नति व सुख–समृद्धि होती। इसी के साथ इस लेख को निम्न पंक्तियों के साथ विराम देते हैं।

'कलम आज तू स्वामी दयानन्द की जय बोल, हिन्दी प्रेमी रत्न वह कैसे थे अनमोल।'

–मनमोहन कुमार

'अंधविश्वासों का खण्डन समाज की उन्नति के लिए परम आवश्यक'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

जिस प्रकार से मनुष्य शरीर में कुपथ्य के कारण समय–समय पर रोगादि हो जाया करते हैं, इसी प्रकार समाज में भी ज्ञान प्राप्ति की समुचित व्यवस्था न होने के कारण सामाजिक रोग मुख्यतः अन्धविश्वास, अपसंस्कृति एवं किंकर्तव्यविमूढ़ता आदि हो जाया करते हैं। अज्ञान, असत्य व अन्धविश्वास का पर्याय है। जहां अज्ञान होगा वहां अन्धविश्वास वर्षा ऋतु में खेतों में खरपतवार की तरह उग ही जाया करते हैं। उदाहरण के लिये हम प्रकृति वा सृष्टि को देखते हैं तो हमारे मन में प्रश्न आता है कि यह सुव्यवस्थित संसार किसकी रचना है अर्थात् इसका रचयिता कौन है? अब इस प्रश्न के उत्तर के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञानी भी ऐसा हो जो लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति को ही परम प्रमाण न मानकर वैदिक परम्परा में हमारे ऋषियों व मुनियों ने विचार, ध्यान व चिन्तन द्वारा जिस सत्य को प्राप्त किया, उस ज्ञान व अनुभव से परिचित हो व उसको समझने वा मानने वाला हो। आजकल के हमारे पढ़े लिखे लोग हमारे वेद एवं अन्य ज्योतिष, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति आदि का अध्ययन तो करते नहीं, केवल विज्ञान, इतिहास व भूगोल आदि विषयों का अध्ययन कर इन प्रश्नों पर विचार करते हैं तो वह इस संसार की रचना में छिपी हुई सत्ता को जान नहीं पाते। वेदों ने कहा है कि 'ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किंच जगत्यां जगत्', 'स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां' आदि मन्त्र सूक्तियों में संसार के रचयिता को सर्वव्यापक ईश्वर बताया गया है और उसे ही पृथिवी व द्युलोक का आधार, धारणकर्त्ता व रचयिता बताया गया है। ईश्वर का युक्ति व तर्क संगत वर्णन भी वेदों में विस्तार से प्राप्त होता है। जो बात तर्क से सिद्ध वा अकाट्य हो वह सत्य होती है। सत्य निर्धारण की मुख्य विधि व प्रक्रिया यही है कि किसी विषय के पक्ष व विपक्ष के विचारों की समीक्षा की जायें और जो बातें अकाट्य हों, उनको सत्य माना जाये। ईश्वर विषय पर विस्तार से अध्ययन व निर्णय हेतु वेदान्त दर्शन की रचना महर्षि बादरायण वा वेद व्यास जी ने सहस्रों वर्ष पूर्व वैदिक काल में की थी। इसमें कहा गया है कि जिससे इस संसार की उत्पत्ति हुई है, जिससे इसका पालन वा संचालन होता है तथा अन्त में जिससे इस संसार का प्रलय व विनाश होता है, उसे ईश्वर करते है। यह ईश्वर हमारी ही तरह से एक चेतन तत्व है। अन्तर इतना है कि हम एकदेशी व अल्प हैं तथा ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है। सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता उसका अनादि व नित्य गुण है। वह सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल वा आदि स्रोत है। वेदान्त दर्शन में इन लक्षणों व गुणों से युक्त ईश्वर को सिद्ध भी किया गया है। दर्शन का आधार समस्त वैदिक विचार व उनका चिन्तन है। सभी छः दर्शन चार वेदों के पोषक हैं। अतः यह सिद्ध होता है कि एक सर्वव्यापक और सर्वज्ञ सत्ता ईश्वर है जिससे, जिसके द्वारा व जिसके ज्ञान व सामर्थ्य से मूल प्रकृति नामी सत्ता जो सत्व, रज व तम गुणों वाली अनादि व नित्य है, से पूर्वोक्त ईश्वर ने इस सृष्टि को रचा वा बनाया है। यह कार्य ऐसा ही है जैसे कि हम किसी वस्तु के निर्माण का ज्ञान अर्जित कर निर्माण में उपयोगी सभी पदार्थों को एकत्र कर ज्ञान व शक्ति रूपी सामर्थ्य का प्रयोग कर पदार्थों को बनाते हैं। उद्योग में पदार्थों का निर्माण भी इसी सिद्धान्त पर होता है। यदि इच्छित वस्तु के निर्माण का ज्ञान न हो, निर्माण में आवश्यक पदार्थ उपलब्ध न हो तथा हमारे उद्योग में यन्त्र पदार्थ निर्माण के सर्वथा वा सब प्रकार से उसके अनुकूल व अनुरूप न हो तो नया इच्छित पदार्थ नहीं बन सकता है।

खण्डन का अर्थ किसी पदार्थ को तोड़ना है। सत्य तो सत्य है उसका खण्डन वा उसका तोड़ना सम्भव नहीं है। असत्य व अज्ञान ऐसा है कि जिससे मनुष्य को हानि होती है और वह उस अज्ञानाधारित कार्य से इच्छित लक्ष्य व उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाता। अतः हमें अपनी बुद्धि से मनन कर इच्छित विषय के सभी पहलुओं पर विचार कर, जो उद्देश्य को पूरा करने वाले पहलु हैं, उन्हें उपयोग में लाना होता है और जो अनुपयोगी होते हैं, उन्हें छोड़ना होता है वा अज्ञानियों को उन अज्ञानतापूर्ण कार्यों से छुड़वाने के लिए उनका खण्डन व सत्य पदार्थ, पक्ष, पहलुओं का मण्डन कर समझाना होता है। इस कसौटी वा तुला पर हम अपने जीवन के प्रत्येक कार्य व चिन्तन को देख व परख कर ग्रहण व त्याग कर सकते हैं। सबसे पहला कार्य तो यह करना है कि हम सब सभी सत्य विद्याओं का अध्ययन करें। आधुनिक ज्ञान सब अच्छा नहीं है और प्राचीन ज्ञान सब बुरा व अनुपयोगी नहीं है। हमें दोनों में सत्य ज्ञान व विद्याओं का ग्रहण व असत्य ज्ञान तथा विद्याओं का त्याग करना चाहिये। जहां तक इस संसार के निर्माता को समझना है तो हमें केवल वेद और वैदिक साहित्य की ही शरण लेनी चाहिये। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के सत्य स्वरूप के निर्धारण के

लिए सत्यार्थ प्रकाश नाम का ग्रन्थ लिखा है जो सभी प्रकार की सत्य मान्यताओं से हमारा परिचय कराता है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी इसी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में असत्य, मिथ्या, अज्ञान व तर्कहीन मान्यताओं का परिचय कराकर उनका वेद, युक्ति व तर्क आदि प्रमाणों से खण्डन किया है। यदि हम सत्य को जानना चाहते हैं तो हमें सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करना ही होगा। सत्य का ज्ञान हो जाने व जीवन में उसका आचरण करने से हम उन्नति को अथवा जीवन में विकास जो कि उन्नति का ही पर्याय है, प्राप्त होते हैं और विपरीत स्थिति में अवनति व गिरावट को प्राप्त होते हैं। इसी कारण महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहने को कहा है। वह उपदेश करते हैं कि सत्य को मानना और मनवाना और असत्य को छोड़ना और छुड़वाना उन्हें व सभी मनुष्यों का अभीष्ट होना चाहिये। बहुत से लोग उनके खण्डन करने को बुरा मानते थे परन्तु यही कहा जा सकता है कि ऐसे लोग अज्ञानी व स्वार्थी ही हो सकते हैं। कोई भी ज्ञानी व्यक्ति असत्य के खण्डन व सत्य के मण्डन से नाराज व उद्विग्न कभी नहीं हो सकता। ज्ञानी व विवेकपूर्ण व्यक्ति वही हो सकता है जो असत्य के खण्डन का प्रशंसक व सत्य के मण्डन का भी प्रशंसक हो। विगत लगभग 140 से कुछ अधिक वर्षों में महर्षि दयानन्द द्वारा खण्डित व मण्डित मान्यताओं को किसी मत, सम्प्रदाय, धार्मिक संस्था का कोई भी धर्म गुरू व विद्वान युक्ति व प्रमाण पूर्वक खण्डन व प्रतिवाद नहीं कर सका। इससे सिद्ध हो गया है कि महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में जो कहा था वह सर्वथा व पूर्णतः सत्य था व आज भी है।

अब खण्डन की देशोन्नति में भूमिका पर विचार करते हैं। खण्डन करने से असत्य व अज्ञान का नाश होता है। देशोन्नति में असत्य व अज्ञान बाधक होते हैं, यह सर्वमान्य सिद्धान्त है। उदाहरण रूप में विचार कर सकते हैं कि यदि देश व समाज के सभी लोग असत्य भाषी अर्थात् झूठे और मिथ्याचारी हों तो क्या समाज व देश उन्नति कर सकते हैं? उसका एकमात्र उत्तर है कि नहीं कर सकते। सत्य सदा सर्वदा प्रशंसनीय और असत्य व अन्धविश्वास सर्वदा निन्दनीय होने से खण्डनीय हैं। देश में जितने अधिक मनुष्य सत्याचारी वा सदाचारी, चरित्रवान, देशभक्त, ईश्वरभक्त, जातिवाद, ऊंच–नीच, छोटे–बड़े की भावना से मुक्त होंगे वह समाज व देश उतना ही उन्नत होगा। यूरोप में उन्नति का कारण ही वहां अन्धविश्वासों की कमी व देशवासियों के आदर्श चरित्र हैं। वहां भ्रष्टाचार, असत्य व्यवहार, जन्मना जातिवाद, ऊंच–नीच, सामाजिक विषमता, मिथ्या ईश्वरोपासना, मिथ्या धार्मिक कर्मकाण्ड, व्रत व उपवास आदि न्यूनातिन्यून है जिससे वह प्रगति व उन्नति कर रहे हैं। हमारा सारा देश व विश्व के सभी देश अधिकांश रूप में यूरोप के वैज्ञानिकों के आभारी हैं जिनकी कष्पा व वैज्ञानिक अनुसंधानों के कारण हमें अपने दैनिक जीवन में उपयोग की वस्तुएं यथा विद्युत व इससे संचालित यन्त्र, कार, सुविधादायक भवन व आवास, टेलीफोन, कम्प्यूटर, रेल व वायुयान, अच्छी सड़के, रोगोपचार व शल्य क्रिया का ज्ञान आदि उपलब्ध हैं। यह सब सत्य की खोज व इससे प्राप्त देनें हैं। दूसरी ओर हमारा देश आज भी अज्ञान, अन्धविश्वास, असत्य, मिथ्याचारों व सामाजिक विषमताओं के झंझावतों में उलझा हुआ है जो हमें पतन, अवनति व गुलामी की ओर ले जा रहे हैं। आज इसी कारण कुछ लोग तो बड़े बड़े धन कुबेर बन गये हैं और दूसरी ओर न लोगों को पेट भर भोजन है, न चिकित्सा व्यवस्था है, न अच्छा आवास न अन्य सुविधायें हैं। हमारे अधिकांश देशवासियों का नरक से भी बुरा जीवन है और हम गर्व करते हैं कि हमारा देश सष्टि का धर्म, ज्ञान व विद्या का आदि स्रोत रहा है। यह पूर्ण सत्य होते हुए भी वर्तमान परिस्थितियों में हमें मिथ्या अभिमान से ग्रसित प्रदर्शित करता है। देश के मानव मानव में जमीन आसमान का अन्तर हमारी शासन प्रणाली की देन के साथ सबके लिए एक समान, निःशुल्क, वैदिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा के न होने के कारण है। इसका उत्तरदायित्व भी किसी न किसी रूप में शासन प्रणाली को ही है जिसमें अनेक सुधारों की आवश्यकता है। अतः असत्य का खण्डन कर ही समस्याओं का निदान किया जा सकता है। असत्य के खण्डन से ही देश सबल, उन्नत व विकसित होगा। इस देश को उन्नत व विकसित उसी दिन कहा जायेगा जिस दिन सभी देशवासी वैदिक शिक्षा से शिक्षित होकर परस्पर एक दूसरे को मित्र, बन्धु व सबको एक परिवार के सदस्य अर्थात् 'वसुधैव कुटुम्बकम' की दषष्टि से देखेंगे और मानेंगे।

हम समझते हैं कि यह सिद्ध सत्य सिद्धान्त है कि असत्य के खण्डन और सत्य के मण्डन से ही व्यक्ति, समाज व देश का विकास व सर्वांगीण उन्नति सम्भव है और इसके विपरीत स्थिति हमें अवनति की ओर ले जाती है।

—मनमोहन कुमार आय

అసలు మహాత్ముడు

'ప్రభుత్వం వద్దంది... మానేద్దాం'

- ఎం.వి.ఆర్. శాస్త్రి

1919 ఏప్రిల్ 13, సంవత్సరాది పండుగ రోజు. అమృత్‌సర్ ఊరి మధ్య జలియన్ వాలాబాగ్‌లో పెద్ద బహిరంగ సభ జరపనున్నట్టు ముందే ప్రకటించారు. అది బహిరంగ స్థలం. దాని చుట్టూ ఇళ్లు. లోపలికి వెళ్లేందుకు ఒకటే దారి. అది ఎంత ఇరుకు అంటే గుర్రపు బండి కూడా వెళ్లలేదు. అలాంటి చోట 20 వేల మంది స్త్రీలు, పురుషులు, పిల్లలు కిక్కిరిసి ఉన్నప్పుడు జనరల్ డయ్యర్ ప్రవేశించాడు. అతడి వెంట నూరు మంది భారతీయ సిపాయిలు, యాభై మంది బ్రిటిషు సైనికులు. వచ్చీ రావడమే వారిని బారులు తీర్చి 'ఫైర్' అన్నాడు.

అక్కణ్నుంచి వెళ్లిపొమ్మని జనాన్ని ఆజ్ఞాపించాకే ఫైరింగు చేయించానని దరిమిలా హంటర్ కమిషన్‌కు డయ్యర్ చెప్పుకున్నాడు. చెదిరిపొమ్మని ఆర్డరు వేసిన రెండు మూడు నిమిషాలకే ఫైర్ చేశామని అతడే ఒప్పుకున్నాడు. ఇరుకు దారి నుంచి 20 వేల మంది 2,3 నిమిషాలలో నిష్క్రమించ గలగటం అసంభవం.

మొత్తం 1600 రౌండ్లు కాల్చాక ఫైరింగు ఆపారు. అప్పుడైనా ఎందుకు ఆపారంటే మందుగుండు సామగ్రి అయిపోయింది కనుక. 'కావలసిన అమ్యూనిషన్ ఉంటే ఇంకా ఎక్కువసేపు కాలుస్తూనే ఉండేవాల్లం. అసలు ఒక సాయుధ శతఘ్ని శకటాన్ని కూడా తీసుకువెళ్లాం. దారి ఇరుకు కనుక దాన్ని లోపలికి తీసుకువెళ్లలేదు. అది ఉంటే దాని తోనూ ఫైరింగ్ చేయించేవాడిని' అని హంటర్ కమిషన్‌కు ఘనంగా చెప్పాడు డయ్యర్. భయోత్పాతంతో జనాన్ని హడలగొట్టటానికే ఇదంతా చేశారా ్నతీ కమిటీ వారు అడిగితే అతడు ఇలా బదులిచ్చాడు.

"No, it was not, It was a horrible duty I had to perform. I think it was

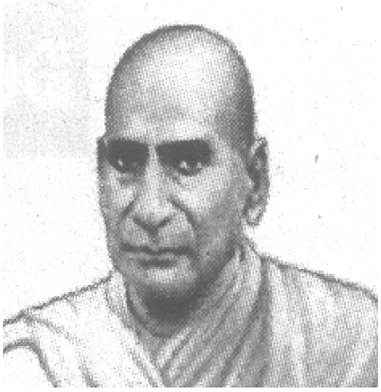

merciful thing. I thought that I should shoot well and shoot strong, so that I, or anybody else should not have to shoot again. I think it is quie possible I could have dispersed the croud wihout firing, but htey would have come back again and laughed, and I should have made what I consider to be a fool of myself.

(కాదు. నేను ఘోరమైన డ్యూటీ చేయవలసి వచ్చింది. అది దయతో చేసిందేనని నేను అనుకుంటాను. నేను బాగా, బలంగా షూట్ చేయాలని అనుకున్నాను. ఎంత బాగా అంటే నాకు గాని, ఇంకొకరికి గాని షూట్ చేయాల్సిన అవసరం మళ్లీ రాకూడనంత. ఫైరింగు లేకుండా గుంపును చెదరగొట్టగలిగేవాడినే. కాని వాళ్లు మళ్లీ తిరిగొచ్చి నవ్వేవాళ్లు. నేను ఫూల్ అయ్యేవాడిని.)

సైనికులు ఎత్తు మీద ఉండి పల్లంలోతీ జన సమూహం మీద దగ్గరి నుంచి గురిపెట్టి వరసగా కాల్చారు. గవర్నమెంటు కథనం ప్రకారమే కాల్పుల్లో నాలుగు వందల మంది మరణించారు. రెండు వేల మంది వరకూ గాయపడ్డారు. చనిపోయిన వాళ్లు, చావు బతుకుల్లో గిలగిలలాడుతున్న వాళ్లు గుక్కెడు మంచినీళ్లు కాని, వైద్య సహాయం కాని అందే దిక్కులేక ఆ రాత్రంతా అక్కడే అలాగే పడి ఉన్నారు. కనిపిస్తే కాల్చేస్తామని బెదిరించడంతో కర్ఫ్యూను ధిక్కరించి అడుగు బయటవేసే ధైర్యం లేక బంధుమిత్రులు గుండెలవిసేలా ఏడుస్తూ ఆ రాత్రంతా ఇళ్లలోనే ఉండిపోయారు.

జనరల్ డయ్యర్ ప్రజలకు క్రూరమైన శిక్షలు వేశాడు. అమృత్‌సర్‌కి నీటి సరఫరా, విద్యుత్ సరఫరా ఆపించాడు. మిషనరీ లేడీ డాక్టరు మీద లోగడ ఎవరో ఆకతాయిలు దాడి చేసిన వీధిలో ఉండేవాళ్లు, అటుకేసి వెళ్లగోరేవారు ఎవరైనా నేల మీద పాకుతూనే వెళ్లాలని ఆర్డరు వేశాడు. వీధుల్లో ఎక్కడా ఇద్దరికి మించి కలిసి వెళ్లగూడదు. బైసికిళ్లు, బండ్లు అన్నీ సర్కారు వారికి ఒప్పగించాలి. మార్షల్ లా కింద సాక్ష్యాలూ, రుజువులతో నిమిత్తం లేకుండా ఎవరిని పడితే వారిని పట్టుకుని ఇష్టానుసారం శిక్షించారు. 51 మందికి ఉరిశిక్ష వేశారు. 160 మందిని దీర్ఘకాలం జైలుకు పంపారు.

పంజాబ్ దురంతం అమృత్‌సర్‌కే పరిమితం కాలేదు. లాహోర్, గుజరన్‌వాలా, కసూర్ తదితర ప్రాంతాల్లోనూ మహా ఘోరాలు జరిగాయి. లాహోర్‌లో రాత్రి 8 తరవాత ఎవరైనా వీధుల్లో కనిపిస్తే కాల్చేసేవారు. లేదా కొరడాలతో చావబాదే వారు. ఒ పెద్దాయన రాత్రి వేళ ఇంటి పక్క సందులో ఆవుకు మేత వేస్తుంటే పట్టుకుని కర్ఫ్యూను ధిక్కరించిన అపరాధానికి చితకబాదారు. దుకాణాలను ఎవరూ

లెఫ్టినెంట్ డోడ్కిన్స్ అనే వాడికి విమానం మీంచి చూస్తే ఒక చోట ఇరవై మంది ఉన్న గుంపు కనిపించింది. వారందరూ పొలాల్లో పని చేసుకుంటు న్నారు. అయినా గుంపు గుంపే కనక అతి దగ్గరగా వెళ్లి అంత మందినీ మిషన్ గన్‌తో కాల్చాడు. పెళ్లి బృందాల మీద, స్మశానానికి వెళుతున్న గుంపుల మీద కూడా ఇలాగే గుళ్లవర్షం కురిపించాడు.

మూయడానికి వీల్లేదని నిర్బంధించారు. మాట వినని వారిని కాల్చేశారు. వారి దుకాణాలను లూటీ చేయించారు.

లాహోర్‌లో విద్యావంతుల మీద.. టీచర్లు, ప్లీడర్లు వంటి ఉన్నత వృత్తుల వారి మీద కల్నల్ జాన్సన్ గురిపెట్టాడు. రాజకీయ ఆందోళనకారులు ఎక్కువగా ఈ వర్గాల నుంచే తయారవుతున్నారని అతడికి కోపం. మార్షల్‌లా నోటీసులను ఎక్కువగా అలాంటి పెద్ద మనుషుల గోడల మీదే అంటించేవారు. వాటిని జాగ్రత్తగా చూడాల్సిన బాధ్యత ఇంటి వారిదే అన్నారు. దారిన పోయేవారెవరైనా ఆ నోటీసును కాస్త చెడిపినా, చించినా ఇంట్లోని వారి వీపులు చిట్లాయే !

దెబ్బల భయానికి పగలంతా పనులు మానుకుని ఇంట్లోని వారు వంతులు వేసుకుని గోడ కాపలా కాయగలరు. కాని రాత్రివేళ ఎలా? 8 గంటల తరవాత కాలు బయటపెట్టటానికే వీల్లేదాయె. తమను సతాయించటం కోసం పోలీసు వాడే వచ్చి నోటీసును కాస్త ఖరాబు చేసినా కొరడా దెబ్బలు తప్పవు. సరే, నిద్ర మానుకుని రాత్రంతా కాపలా కాయటానికి పని వారిని పెడతాము. వారికి గుమ్మం దాటేందుకు అనుమతి ఇవ్వండి అని పెద్ద మనుషులు వేడుకున్నారు. పనివాళ్లకు ఇవ్వం; కావాలంటే ఇంటి యజమానికి మాత్రం పర్మిషను ఇస్తాం. ఇంటి ముందు నిలువు జీతం ఉండి మీ గోడమీది నోటీసును మీరే కాపలా కాసుకోండి – అన్నారు అధికారులు. ఒక కాలేజి గోడ మీది నోటీసు చిరిగిన నేరానికి ప్రిన్సిపాల్‌తో సహా ఉపాధ్యాయ సిబ్బంది అందరినీ అరెస్టు చేసి మిలిటరీ ఎస్కార్టుతో లాక్కపోయి మూడు రోజులు నిర్బంధించి నరకం చూపించారు.

16–20 ఏళ్ల కుర్రవాళ్ల మీద తెల్ల సర్కారు ప్రత్యేక శ్రద్ధ పెట్టింది. యూనివర్సిటీ టౌను కాబట్టి లాహోర్‌లో చాలా కాలేజిలు ఉన్నాయి. వాటిలో చదివే విద్యార్థులందరూ రోజుకు నాలుగుసార్లు మార్షల్ లా అధికారుల వద్ద హాజరు వేయించుకోవాలి. వారుండేది నాలుగైదు మైళ్ల దూరంలో. సైకిలు మీద వెళదామంటే ఊళ్లోని సైకిళ్లు, ఇతర వాహనాలు అన్నిటినీ ఏనాడో గుంజేసుకున్నారు. కాలి నడకే గతి. అది ఏప్రిల్ నెల. రోళ్లు పగిలే ఎండ. నీడలోనే 108 డిగ్రీల ఫారన్‌హీట్ ఉష్ణోగ్రత ఉండే సమయాన మండుటెండలో ఈ పిల్లలు రోజూ ఇరవై మైళ్లు నడవాలి. చాలామంది వడదెబ్బకు దారిలోనే సొమ్మసిల్లేవారు. స్పృహ తప్పినా గైర్హాజరీకి శిక్ష తప్పదు.

గుజరన్‌వాలాలో కల్నల్ ఓబ్రియన్ నిర్వాకం ఇంకా ఘోరం. అతడు విమానాల నుంచి మలియక జనం మీద ఏకంగా బాంబులే వేయించాడు. కనపడ్డ వారినల్లా మిషన్ గన్లతో కాల్పించాడు. ఓసారి జన సమూహాల మీద తక్కువ ఎత్తు విమాన నుంచి గురి చూసి బాంబులు విసిరి, 255 రౌండ్లు మిషన్ గన్లతో వరసగా ఫైర్ చేయించాడు. ఎన్ని వందల ప్రాణాలు పోయి ఉంటాయో ఊహించవచ్చు. బ్రిటిషు సర్కారు చెప్పిన లెక్క మాత్రం తొమ్మిది మందే చనిపోయారని ! ఇంకో 16గురు గాయపడ్డారని!

గుంపు కనపడితే కాల్చెయ్యమని పైవాళ్లు ఆర్డరు వేశారు. లెఫ్టినెంట్ డోడ్కిన్స్ అనే వాడికి విమానం మీంచి చూస్తే ఒకచోట ఇరవై మంది ఉన్న గుంపు కనిపించింది. వారందరూ పొలాల్లో పి చేసుకుంటున్నవారు. అయినా గుంపు గుంపే కనక అతి దగ్గరగా వెళ్లి అంత మందినీ మిషన్ గన్‌తో కాల్చాడు. పెళ్లి బృందాల మీద, స్మశానానికి వెళుతున్న గుంపుల మీద కూడా ఇలాగే గుళ్లవర్షం కురిపించాడు.

మేజర్ కార్బీ అనే ఇంకో సైన్యాధికారి ఇచ్చిన సాక్ష్యాన్ని హంటర్ కమిషన్ ఇలా రికార్డు చేసింది.

"The crowd was running away and he fired to disperse them. As the crowd dispersed, he fired the machine gun into the village itself. He could make no discrimination between the innocent and the guilty. He was at a height of 200 feet an could see perfectly what he was doing. His object was not accomplished by the gropping of bombs alone. By killing a few he thought he would prevent the people from collecting again. After that he went over he city, dropping bombs, and fired ar people who were trying to get away.'

మరి కళ్ల ముందే ఇన్నిన్ని ఘోరాలు జరుగుతుంటే జాతీయ మహా సంస్థ అని చెప్పుకునే కాంగ్రెసు ఏమి చేసింది? ఎక్కడినుంచో వచ్చి, కుట్రలూ కూహకాలతో దుర్మార్గంగా దేశాన్ని ఆక్రమించిన తెల్ల రాకాసులు ఏ పాపమెరుగని అమాయక ప్రజలను నిష్కారణంగా ఊచకోత కోసి, ఇన్నిన్ని అవమానాలకు గురిచేసి ఇంతలా కాల్చుకు తింటూంటే ఆ ప్రజలు దేవుడిలా కొలిచే మహాత్ముడు ఎలా స్పందించాడు?

(పరుగులిడుతున్న జనాల మీద అతడు ఫైర్ చేశాడు. గుంపు చెదిరిపోసాగాక ఊరి మీద మిషన్ గన్‌తో కాల్పులు జరిపాడు. ఎవరు దోషులు ఎవరు అమాయకులు అన్న విచక్షణ అతడికి లేదు. 200 అడుగుల ఎత్తు మీద నుంచి తాను ఏమి చేస్తున్నదీ అతడికి బాగా తెలుసు. బాంబులు కిందికి జార్చడంతోటే అతడి ధ్యేయం నెరవేర లేదు. కొంతమందిని చంపడం ద్వారా జనం మళ్లీ గుమికూడకుండా చేయగలనని అతడు తలచాడు. దాని తరవాత అతడు నగరం మీదికి వెళ్లి బాంబులు వేశాడు. పారిపోవాలని చూసిన జనం మీద కాల్పులు జరిపాడు.)

(బ్రిటిషు ఆఫీసర్లు ఎదురుపడ్డప్పుడు భారతీయులు వాహనం దిగి, చేతిలో గొడుగు ఉంటే దాన్ని మడిచి వినమ్రంగా సెల్యూట్ చేయాలని గుజరన్‌వాలాలో కల్నల్ ఓబ్రియన్ ఆర్డరు! అలా చేయని వారికి కొరడా దెబ్బలు, ఫైను, జైలు! విచారణ అనేది లేకుండా వారాల తరబడి పౌరులను నిష్కారణంగా నిర్బంధంలో ఉంచడం చాలా మామూలు. ఓసారి పుర ప్రముఖులు చాలామందిని ఇళ్లలో నుంచి ఉన్న పళాన లాక్కొచ్చి, ఒంటి మీద సరైన దుస్తులు, కాళ్లకు చెప్పులు లేకుండా చేతులకు సంకెళ్లు వేసి మండుటెండలో మైళ్ల దూరం నడిపించి లాహోర్ రైలు ఎక్కించారు. గుక్కెడు నీళ్లు పోయకుండా, కాలకృత్యాలకూ వెళ్లనీయకుండా ఇరుకు గదిలో అంత మందినీ 48 గంటలపాటు నిర్బంధించారు.

… …. …. ….

ఇదంతా వింటూంటే ఏమనిపిస్తుంది? మన దేశంలో, మన ప్రజలను విదేశీ

పాలకులు ఇంత రాక్షసంగా హింసించి, ఇన్ని ఘోరాలు చేశారా అని ఎవరికైనా రక్తని మరగదా?

మన సభ్య ప్రపంచంలో, అదీ 20వ శతాబ్దంలో, నాగరికతకు, సంస్కారానికి కేరాఫ్ అడ్రసు అని చెపుపకునే తెల్లతోలు పాలకులు నిజంగా ఇంత దారుణాలకు ఓడిగట్టారా అని న్మమ్మశక్యమా? సందేహం అక్కర్లేదు. ఎవరో గిట్టనివారు బాధ్యతా రహితంగా పుట్టించిన కబుర్లు కావు. జాతీయోద్యమాన్ని నడిపించింది అందరూ అనుకునే భారత జాతీయ కాంగ్రెసు అధికారిక చరిత్ర గ్రంథం The History of the Congress గ్రంథం 278–289 పేజీల్లో **భోగరాజు పట్టాభి సీతారామయ్యగారు** ప్రభుత్వ రికార్డుల ఆధారంతో ఏకరవు పెట్టిన వివరాలివి.

మరి కళ్ల ముందే ఇన్నిన్ని ఘోరాలు జరుగుతుంటే జాతీయ మహా సంస్థ అని చెప్పుకునే కాంగ్రెసు ఏమి చేసింది? ఎక్కడినుంచో వచ్చి, కుట్రలూ కూహకాలతో దుర్మార్గంగా దేశాన్ని ఆక్రమించిన తెల్ల రాకాసులు ఏ పాపమెరుగని అమాయక ప్రజలను నిష్కారణంగా ఊచకోత కోసి, ఇన్నిన్ని అవమానాలకు గురిచేసి ఇంతలా కాల్చుకు తింటూంటే ఆ ప్రజలు దేవుడిలా కొలిచే మహాత్ముడు ఎలా స్పందించాడు? ప్రజాకంటక దుష్ట ప్రభుత్వం మీద తన సత్యాగ్రహ వజ్రాయుధాన్ని ఝళిపించాడా? జాతికి జరిగిన దారుణ అన్యాయానికి ప్రతిక్రియగా, ప్రజలను సమీకరించి మహోద్యమమేదైనా నడిపాడా? రౌలత్ చట్టాలకు వ్యతిరేకంగా అప్పటికే నడుస్తున్న సత్యాగ్రహ ధర్మ పోరాటాన్ని ఇంకా ముమ్మరం చేశాడా?

లేదు. ఇదేదీ చేయకపోగా బంగారం లాంటి ఉద్యమాన్ని తన చేతులతో తానే నిలువునా చంపేశాడు. ఆ కాలాన పంజాబ్ చుట్టూ మార్షల్‌లా ఇనుప తెర ఉన్నందున, వార్తా ప్రసారాల మీద, వ్యక్తుల కదలికల మీద, కమ్యూనికేషన్ల మీద కరకు ఆంక్షలు పెట్టినందున యథార్థంగా అక్కడ జరిగిందేమిటో వెంటనే మహాత్ముడికి తెలియకపోయి ఉండవచ్చని సందేహ లాభం ఇద్దామా? 1919 ఏప్రిల్ 13న జలియన్‌వాలా బాగ్‌లో జరిగిన ఘోర దురంతం వివరాలు ఆ మరునాడే సత్యాగ్రహ ఉద్యమాన్ని జన్ మీద నెపం పెట్టి ఉపసంహరించే సమయానికి ఆయన దృష్టికి వచ్చి వీండకపోవచ్చు. కాని తరవాత మెల్లిగా అయినా గుండెలు పిండే వాస్తవాలన్నీ బయటపడ్డాయి కదా? జలియన్ వాలాబాగ్‌లో వేల మందిని పిట్టల్లా కాల్చి చంపిన దురా గతానికి యావత్ప్రపంచం నివ్వెర పోయింది కదా? ఆ తరవాతైనా ప్రజల పట్ల నైతిక బాధ్యత గుర్తెరిగి, ప్రజల మీద యుద్ధం ప్రకటించిన పరాయి ప్రభుత్వాన్ని దృఢంగా, నిర్మొగమాటంగా ఎదుర్కొని, ప్రజల పక్షాన నిలిచేందుకు ఆయన చిటికెన వేలును కదిలించాడా?

డయ్యర్ దయ్యం వేల మందిని బలిగొని నాలుగో నెల నడుస్తూండగా 1919 జులై 21న గాంధి మహాత్ముడు ఒక గొప్ప ప్రకటన చేశాడు. ఏమనంటే–

‘బొంబయి గవర్నరు గారి ద్వారా భారత ప్రభుత్వం నాకు తీవ్రమైన వార్నింగు చేసింది. గవర్నరుగారు నన్ను తన దగ్గరికి పిలిపించి మరీ చెప్పారు. శాసనోల్లంఘనను తిరిగి ప్రార్భిస్తే ప్రజా భోద్రతపై పర్యవసానాలు తీవ్రంగా ఉంటాయన్నది ప్రభుత్వ హెచ్చరిక. నేను లోతుగా ఆలోచించిన మీదటట ఈ వార్నింగులు పురస్కరించుకుని ప్రస్తుతానికి పౌర ప్రతిఘటనను పునః ప్రారంభించరాదని నిర్ణయించాను. పౌర ప్రతిఘటన మళ్లీ మొదలెట్టటానికి సమయం ఆసన్నమైందని చాలా మంది సత్యాగ్రహులలాగే నేను కూడా నిశ్చయించి ఘనత వహించిన వైస్రాయి గారికి సవినయంగా ఒక లేఖ రాశాను. ఆ విధంగా సత్యాగ్రహం తిరిగి చేపట్టాలన్న నా తలంపును తెలియపరుస్తూ వారికి కొన్ని అభ్యర్థనలు చేశాను. రౌలత్ శాసనాన్ని ఉపసంహరించాలని, పంజాబ్ కల్లోలాల విచారణకు నిష్పాక్షికమైన గట్టి కమిటీని త్వరలో వేయాలని, అన్యాయంగా జైలుశిక్ష విధించిన బాబూ కాళీనాథ్ రాయ్‌ని విడిచిపెట్టాలని అందులో కోరాను. రాయ్ కేసులో తీనిర్ణయానికి భారత స్మారుకు ధన్యవాదాలు తెలపాలి. దానివల్ల రాయ్‌గారికి పూర్తి న్యాయం జరగకపోయినా, శిక్షా కాలాన్ని గణనీయంగా తగ్గించారు. న్యాయానికి అదే పెద్ద కొలమానం. నేను అడిగిన ప్రకార కమిటీనీ నియమించే పనిలో ఉన్నట్టు కూడా నాకు హామీ ఇవ్వబడింది.

"With these indications of goodwill, it would be unwise on my part not to listen to the warning given by the Government. A civil resister never seeks to embarass the Government I feel that I shall better serve the country and the Government and those Punjabi leaders who, in my opinion, have been so unjustly convicted and so cruelly sentenced, by the suspension of civil resistance, for the time being"

(ఈ సుహృద్భావ సంకేతాల తరవాత కూడా ప్రభుత్వం చేసిన హెచ్చరికను నేను ఆలకించక పోవటం అవివేకం. ప్రభుత్వాన్ని ఇబ్బందిలో పెట్టాలని సత్యాగ్రహి ఎప్పుడూ కోరుకోడు. ప్రస్తుతానికి పౌర ప్రతిఘటనను నిలుపు చేయటం ద్వారా దేశాన్ని, ప్రభుత్వాన్ని, అన్యాయంగా నేరం మోపబడి, క్రూరమైన శిక్షలకు గురి అయిన పంజాబీ నాయకులను నేను ఇంకా బాగా సేవించగలను.)

[*The History of the Congress,* B.Sitaramayya, pp.294-295**]**

చెదురుమదురు అల్లర్లను వంకగా చూపి, సత్యాగ్రహ ఉద్యమాన్ని మహాత్ముడు 1919 ఏప్రిల్ 14న అహమ్మదాబాద్ తదితర ప్రాంతాల్లో అర్ధాంతరంగా ఆపు చేయడాన్ని నిరసించి శ్రద్ధానంద స్వామి సత్యాగ్రహ సభకు రాజీనామా చేసినప్పుడు చాలామంది పెద్దలు అయన తొందర పడ్డాడన్నారు. సత్యాగ్రహ బ్రహ్మాస్త్రాన్ని ఆచితూచి బహు జాగ్రత్తగా ఉపయోగించాలన్న తలంపుతో అన్నీ తెలిసిన అంతటి మహాత్ముడు బాగా ఆలోచింతీ చేసిన నిర్ణయాన్ని తప్పుపడితే ఎలా? మామూలు రాజకీయ ప్రమాణాలతో అందరు నాయకుల్లాగే ఆయననీ తూకం వేయటం తప్పు. బ్రిటిష్ మహా సామ్రాజ్యంతో తలపడటానికి తపశ్శక్తితో ఆయన కనుకొన్న సత్యాగ్రహ దివ్యాయుధాన్ని ఆయన ఏ విధంగా ప్రయోగించబోతున్నాడో, ఎలా పోరాడబోతున్నాడో వేచి చూడకుండా ముందే నిర్ణయాలకు రావటం మంచిది కాదు – అని

మహానేతలెందరో మందలించారు.

తరవాత జరిగిందేమిటి?

మహాత్ముడీ కాడికింద పారేసినా తెల్లదొరతనం మిన్నకుండలేదు. ప్రజలమీద పగబట్టినట్టు పంజాబ్‌లో ఘోర కిరాతకాలకు పాల్పడింది. రాజకీయాల జోలికి పోకుండా చట్టానికి లోబడి ప్రశాంతంగా తమ బతుకు బతుకుతున్న లక్షల జనాన్ని, వారు గౌరవించే పెద్ద మనుషులను అమానుషంగా హింసించింది. ప్రపంచ చరిత్రలో కనీవినీ ఎరుగని రీతిలో చెలరేగిన జలియన్ వాలాబాగ్ ఘోర కలికి సభ్య సమాజానికి క్షమాపణ చెప్పి, నరరూప రాక్షసుడు డయ్యర్‌ని శిక్షించవలసింది పోయి... 'నువ్వు చేసింది కరెక్టు..' అంటూ పంజాబ్ గవర్నర్ అదే ముష్కరుడిని మెచ్చుకుంటూ టెలిగ్రాం ఇచ్చాడు. దీన్నిబట్టే జరిగింది ఏదో ఒక అధికారి క్షణికోన్మాద్‌లో చేసిన పాపం కాదనీ, బ్రిటిష్ సామ్రాజ్యమే బుద్ధిపూర్వకంగా వెనక ఉండి నడిపించిన సామూహిక నరమేధమనీ అమాయకులకు సైతం అర్థమవుతుంది.

ఇక ఆగటానికి వీల్లేదు. పౌర ప్రతిఘటనను దేశమంతటా మళ్లీ సాగించాల్సిందే అని అంతో ఇంతో దేశభక్తి, చిత్తశుద్ధి ఉన్న ప్రతి ఒక్కరూ అనుకున్నారు. గాంధి గారికీ అలాగే అనిపించిందట. వెంటనే తన అమోఘ నిర్ణయాన్ని వైస్రాయి దొర వారికి తెలియపరిచారు. అలా చేస్తే ప్రజా భద్రతకు ప్రమాదం అని ఆ ప్రభువు గవర్నరు చేత వార్నింగు ఇప్పించావీ. ప్రభుత్వమే వద్దని వార్నింగు ఇచ్చినప్పుడు వారి మాటను కాదని మనం ముందుకెళితే ఏమి బాగుంటుంది? ప్రభుత్వాన్ని ఎట్టి పరిస్థితుల్లోనూ మనం ఇబ్బంది పెట్టకూడదు కాబట్టి తలపెట్టిన ఉద్యమాన్ని మొదలెట్టకుండానే ఆపేస్తున్నాని మహాత్ముడు వారి నీతిబద్ధ సత్య ప్రకటన పైన చదివారు కదా?

ఇదేమి దౌర్బల్యం? సమయం వచ్చునప్పుడుప్రజల పక్షాన పోరాడటానికి కాక పోతే జాతీయ కాంగ్రెసు ఉన్నదెందుకు? జనాన్నీ కాల్చుకుతినే దుష్ట ప్రభుత్వంతో తలపడటానికి అదే ప్రభుత్వ అనుమతి ఎందుకు? సర్కారు వద్దన్నదని మానేస్తే.. ప్రభుత్వాన్ని ఎట్టి పరిస్థితిలోనూ ఇబ్బంది పెట్టరాదని చేతులు కట్టేసుకుంటే దేశం ఏమి కావాలి? సర్కారుకు అతివిధేయులుగా మనల్ని మనం ఎందుకు దిగజార్చుకోవాలి? అని మహాత్ముడిని ఏ మహానేతా నిగ్గదీయలేదు. కౌరవ సభలో వికర్ణుడిలా ధర్మానికి కట్టుబడి నిర్భయంగా గళమెత్తినవాడీ. ఆ తరవాత కూడా కాంగ్రెసులో ఉండే పోరాడినవాడు ఒకే ఒక్కడు: స్వామి శ్రద్ధానంద.

అసలు మహాత్ముడు

ఈ శీర్షికలోని వ్యాసాలు చదువుతుంటే ఒళ్లు పులకిస్తోంది. మన స్వాతంత్ర్య సమరానికి గాంధీజీనే ప్రారంభకుడు అనుకునేవాళ్లం. కానీ విదేశీ పాలనకు వ్యతిరేకంగా దేశమంతటా వేలాదిమంది పోరాడుతూంటే గాంధీజీ దక్షిణ ఆఫ్రికాలో బ్రిటిష్ ప్రభువుల ముందు అతి విధేయతతో ఉన్నాడని తెలిసి ఆశ్చర్యపోయాం. గాంధీజీని వ్యతిరేకించింది గాడ్సే ఒక్కడే అనుకునే వాళ్లం. చాలామంది ప్రముఖులు వ్యతిరేకించారని తెలుసుకున్నాం.

–శుభ (కాకినాడ)

आर्य समाज गोशामहल ने पौधों को लगाया

ఆర్యసమాజ్ ప్రాంగణంలో శ్రావణ ఉపాకర్మ మహాయజ్ఞం

थश्रावणी उपाकर्म पर्व आर्य समाज नारायणपेट, जि. महबूबनगर

స్వాతంత్ర్యోద్యమంలో

ఆర్యసమాజ్‌ది కీలకపాత్ర

ఆంధ్రభూమి సంపాదకులు ఎంవిఆర్ శాస్త్రి

సికిందరాబాద్‌లో ఆర్యసమాజ్ నిర్వహించిన 'శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వం' కార్యక్రమంలో ప్రసంగిస్తున్న ఆంధ్రభూమి సంపాదకులు ఎంవిఆర్ శాస్త్రి

హైదరాబాద్, ఆగస్టుట 29: జాతీ పోరాటశక్తిగా గర్వించదగిన చరిత్ర గలిగిన ఆర్యసమాజ్ సంస్థ ముందుకు సాగాల్సిన అవసరం ఎంతైనా ఉందని 'ఆంధ్రభూమి' సంపాదకులు ఎంవిఆర్ శాస్త్రి పేర్కొన్నారు. నేడు భారతదేశానికి ఆర్యసమాజ్ దారి చూపించగలదన్న ఆశాభావాన్ని ఆయన వ్యక్తం చేశారు. శనివారం ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్, తెలంగాణ శాఖల ఆధ్వర్యంలో జంటనగరాల ఆర్యసమాజాలు 'సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వం', ఆర్యసత్యాగ్రహ బలిదాన దినోత్సవ కార్యక్రమాన్ని సికినిదరాబాద్‌లో నిర్వహించారు. ఈ కార్యక్రమంలో 'అసలు మహాత్ముడు' పుస్తక రచయిత, ఆంధ్రభూమి సంపాదకులు ఎంవిఆర్ శాస్త్రిని కేంద్ర మంత్రి బండారు దత్తాత్రేయతోపాటు ఆర్య సమాజ్ ప్రతినిధులు ఘనంగా సన్మానించారు. ఈ సందర్భంగా నిర్వహించిన అభినందన సభలో శాస్త్రి మాట్లాడుతూ చరిత్ర గురించి, స్వాతంత్ర్య పోరాటం గురించి నేటికీ ఎన్నో భ్రమలు ఉన్నాయని అన్నారు.

గాంధీజీ అడుగుపెట్టి సత్యాగ్రహ సమరం ప్రారంభించేంతవరకూ జాతీయోద్యమం పుంజుకోలేదన్న అభిప్రాయం తప్పని, 1857 తిరుగుబాటు తీఫలమై, తెల్ల వారి రాక్షసత్వానికి పట్టపగ్గాలు లేనిస్థితిలో, 1880లో స్వామి దయానంద సరస్వతి ఆరంభించిన గోరక్షణ ఉద్యమం 14 ఏళ్ల పాటు నిరాఘాటంగా సాగి జాతీయశక్తులను గొప్పగా కదిలించి, బ్రిటిష సర్కారుకు హడలు పుట్టించిందని అన్నారు. హిందువులకు ప్రాథమిక హక్కులను సైతం నిరాకరించిన నిజాం నియంతృత్వానికి వ్యతిరేకంగా నైజాం సంస్థానంలో 1894 నుంచే వీరోచితంగా పోరాడిన ఘనచరిత్ర ఆర్యసమాజ్‌కుందని అన్నారు. అహింసాత్మకంగా, నియమబద్ధంగా 1938లో ఆర్యసమాజ్ షోలాపూర్ కేంద్రంగా సాగించిన చరిత్రాత్మక సత్యాగ్రహంలో వేలమంది చెరసాలల పాలయ్యారని, మొక్కవోని దీక్షతో పోరాడి, అనుకున్నది సాధించాని అన్నారు ఈ సత్యాగ్రహానికి గాంధీ మహాత్ముడు అండగా నిలవకపోగా, నిజాం ఏజంటుగా వ్యవహరించి, ఆర్యసమాజ్ మీద అభాండాలు వేయడం దురదృష్టకరమని అన్నారు.

ఈ కార్యక్రమానికి ముఖ్య అతిథిగా విచ్చేసిన కేంద్రమంత్రి బండారు దత్తాత్రేయ మాట్లాడుతూ సాంఘిక దురాచారాలను రూపుమాపుతూ సమాజహితం కోసం ఆర్యసమాజ్ సంస్థ కృషి చేస్తోందని అన్నారు. కులమతాలకు అతీతంగా జరుపుకునే కార్యక్రమం రక్షాబంధన్ అని అన్నారు. ప్రముఖ పాత్రికేయుడు పొత్తూరి వెంకటేశ్వరరావు మాట్లాడుతూ వైదిక సంస్కృతి, విలువలకోసం స్పష్టంగా మాట్లాడుతున్న, రాసుతన్న ఏకైక వ్యక్తి తెలుగనాట ఎంవిఆర్ శాస్త్రి మాత్రమేనని కొనియాడారు. ఆర్సమాజ్ ప్రజలకు వేదాన్ని బోధిస్తుందని,

శ్రావణ ఉపాకర్మ యజ్ఞం సందర్భంగా పాల్గొన్న శ్రీ యం.వి.ఆర్. శాస్త్రి, పొత్తూరి వెంకటేశ్వర రావు మరియు కేంద్ర మంత్రి శ్రీ బండారు దత్తాత్రేయ గార్లను సన్మానిస్తున్న దృశ్యాలు.

సికింద్రాబాద్‌లో జరిగిన జంటనగరాల ఆర్యసమాజాల సామూహిక శ్రావణ ఉపాకర్మ పర్వం సందర్భంగా నిర్వహించిన యజ్ఞ కార్యక్రమంలో ఆంధ్రభూమి సంపాదకులు ఎంవిఆర్ శాస్త్రి. అనంతరం సభలో ప్రసంగిస్తున్న కేంద్ర మంత్రి బండారు దత్తాత్రేయ, హాజరైన ప్రజలు.

వేదం తెలుసుకోవడం ద్వారా సమస్యలు తొలగిపోతాయని అన్నారు. దేశాన్ని ముస్లిం రాజులు పరిపాలిస్తున్న రోజుల్లో హిందూదేశాన్ని ఇస్లామిక్ దేశంగా రూపొందించడానికి జరుగుతున్న కుట్రలను తిప్పికొట్టడానికి దేశంలో ఆర్యసమాజ్ ఆవిర్భవించిందని ఆర్య ప్రతినిధి సభ ప్రధాన్ విఠల్‌రావు ఆర్య తెలిపారు. ఈ కార్యక్రమంలో హైదరాబాద్ ఆర్యసమాజ్ ప్రధాన కార్యదర్శి హరికిషన్ వేద, సికిందరాబాద్ శాఖ అధ్యక్షుడు మామిడి శ్రీనివాస్, ప్రధాన కార్యదర్శి మరిపల్లి పండరి తదితరులు పాల్గొన్నారు. ఈ సందర్భంగా డాక్టర్ వసుధ, అరవింద్‌శాస్త్రి ఆధ్వర్యంలో యజ్ఞం నిర్వహించారు.

రీఆర్.పి.రోడ్ సికింద్రాబాద్ ఆర్యసమాజ్ విద్యాలయ ప్రాంగణంలో శ్రావణ ఉపాకర్మ మహాయజ్ఞం నిర్వహిస్తున్న ఆచార్యా వసుధా అరవింద శాస్త్రి గార్లు.

యజ్ఞంలో హాజరైన జనం.

యజ్ఞంలో పాల్గొన్న దత్తాత్రేయ
ఆర్యసమాజ్ ప్రతినిధులు కేంద్ర మంత్రి దత్తాత్రేయ

బన్సీలాల్‌పేట్ : ధర్మ పరిరక్షణ ద్వారా సమాజ శ్రేయస్సు కోసం ప్రతి ఒక్కరు కృషి చేయాలని కేంద్ర కార్మికశాఖ మంత్రి బండారు దత్తాత్రేయ పేర్కొన్నారు. ఆర్పీ రోడ్డు ఆర& సమాజ్ ఆధ్వర్యంలో శనివారం సికింద్రాబాద్ హిందీ విద్యాలయ పాఠశాల ఆవరణలో ఏర్పాటు చేసిన సామూహిక యజ్ఞోపవీత ధారణ, బలిదాన దినోత్స కార్యక్రమానికి ఆయన ముఖ్య అతిథిగా హాజరయ్యారు. మంత్రి మాట్లాడుతూ.. ధర్మం నశిస్తే సమాజానికి ప్రమాదమని ఆందోళన వ్యక్తం చేశారు. ధర్మాన్ని కాపాడేందుకు ప్రతి ఒక్కరు తమవంతు బాధ్యతగా ముందుకు వచ్చి కృషి చేయాలని కోరారు. సమాజ పురోభివృద్ధికి ఆర్య సమాజ్ చేస్తున్న కృషి అభినందనీయమని ఆయన అన్నారు. ఆర్య ప్రతినిధి సభ ప్రధాన్ విఠల్‌రావు ఆర్య మాట్లాడుతూ.. ఆర్య సమాజ్ నిర్మాణాత్మకమైన కార్యక్రమాలతో సమాజ ప్రగతికి కృతనిశ్చయంతో పనిచేస్తోందన్నారు. ఆంధ్రభూమి దినపత్రిక ఎడిటర్ ఎంవీఆర్ శాస్త్రి స్వామి శ్రద్ధానంద స్వామి పేరిట రాసిన 'అసలు మహాత్ముడు' పుస్తకాన్ని మంత్రి దత్తాత్రేయ ఆవిష్కరించారు. అంతకు ముందు యజ్ఞం, శ్రావణి ఉపాకర్మ, యజ్ఞ కార్యక్రమాలను పెద్ద ఎత్తున నిర్వహించారు. కార్యక్రమంలో ప్రెస్ అకాడమీ మాజీ చైర్మన్ పొత్తూరి వెంకటేశ్వర్లు, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఉపాధ్యక్షుడు టీవీ నారాయణ, ఆర్య సమాజ్ అధ్యక్షుడు మామిడి శ్రీనివాస్, మంత్రి ఎం.వెంకటేశ్వర్లు, కంది విశ్వనాథం, సుక్క క్రిష్ణ పాల్గొన్నారు.

పేట ఉపాధ్యాయురాలికి...

జాతీయ అవార్డు

- సెప్టెంబర్ 5న రాష్ట్రపతి చేతుల మీదుగా
- సామాజిక కార్యక్రమాలతో ముందుకు
- పురస్కారం ఊహించలేదు: నాగమ్మ

నారాయణపేట: విద్యతోపాటు సామాజిక, సేవా కార్యక్రమాల్లో విద్యార్థులను భాగస్వామ్యం చేస్తున్న ఉపాధ్యాయురాలు నాగమ్మ జాతీయస్థాయి అవార్డుకు ఎంపిక య్యారు.. సామాజిక సేవా కార్యక్రమాల్లో పాల్గొంటూ విద్యార్థులను అధికంగా ప్రోత్సహిస్తుండటంతో ఆమెకు ఈ అవార్డు లభించింది. 2015-16 విద్యా సంవత్సరానికి అవార్డుకు ఎంపికైన నాగమ్మకు ఢిల్లీలో రాష్ట్రపతి ప్రణబ్ ముఖర్జీ చేతులమీదుగా సెప్టెంబర్ 5న జరిగే ఉపాధ్యాయ దినోత్సవం రోజు ఈ అవార్డును ప్రదానం చేస్తారు. అవార్డుతో పాటు రూ.50 వేల నగదు, ప్రశంసా పత్రం, మెడల్ అందుకోనున్నారు.

కుటుంబ నేపథ్యం :

పేటకు చెందిన అన్నప్ప, గౌరమ్మ దంపతులకు ఆరుగురు సంతానం ఉన్నారు. నలుగురు కుమార్తెలు, ఇద్దరు కుమారులు ఉన్నారు. వీరిలో రెండో కుమార్తె అయిన నాగమ్మ ఉపాధ్యాయ వృత్తిలో కొనసాగుతున్నారు. స్థానిక దయానంద విద్యామందిర్ పాఠశాలలో విద్యార్థులకు విద్యాబుద్ధులు నేర్పించడంతో పాటు సామాజిక సేవా కార్యక్రమాల్లో చురుకుగా పాల్గొంటున్నారు. తల్లిదండ్రులు వ్యవసాయదారులు. నాగమ్మది మధ్యతరగతి కుటుంబం. తాను ఎదుర్కొన్న కష్టాలు ఇతరులకు రావద్దనే ఆమె తపన పడేవారు. ఉన్నతవిద్యలో ప్రతి ఒక్కరు రాణించాలని విద్యారంగాన్ని ప్రోత్సహించేందుకు పూనుకున్నారు. విశ్వవ్యాప్తి నుంచి డీపీఎం పాఠశాలకే అంకితమై ఎనలేని సేవ చేస్తున్నారు.

1978 నుంచి ఉపాధ్యాయురాలిగా :

స్థానిక దయానంద విద్యామందిర్ పాఠశాలలో 1978 నుంచి నాగమ్మ ఉపాధ్యాయురాలిగా ప్రారంభించారు. 1984- 87వరకు ప్రభుత్వ ఉపాధ్యాయురాలిగా ఊట్కూర్ మండలం పల్లెంపల్లి, ధన్వాడ బాలికల ప్రాథమిక పాఠశాలలో విధులు నిర్వర్తించారు. మధ్యలో ఉద్యోగాన్ని వదిలి మళ్లీ డీపీఎంలో చేరి 1987నుంచి ఎయిడెడ్ ఉపాధ్యాయురాలిగా కొనసాగుతూ వస్తున్నారు.

విద్యాభ్యాసం:

1982లో టీటీసీ, 1987లో బీఏ పూర్తిచేశారు. 1992లో బీఈడీ, 2000లో ఎం.ఏ పొలిటికల్ సైన్స్ పూర్తిచేశారు. సెకండరీగ్రేడ్ టీచర్‌గా ప్రస్తుతం పాఠశాలలో కొనసాగుతున్నారు.

సామాజికసేవలో:

అక్షరాస్యత అభివృద్ధితో పాటు మొక్కలు పెంపు పర్యావరణ పరిరక్షణ, విద్యార్థులకు వైద్యశిబిరాలు, ఆటల పోటీలు, రంగవల్లికల పోటీలు, బాలకార్మికుల నిర్మూలన, గోహత్య నిషేధం, వరద బాధితులకు అన్నప్రదానం సభనుంచి దుస్తుల సేకరణ, పంపిణీ, క్విజ్ పోటీలు, సైన్స్‌ఫేర్ తదితర సామాజికసేవల్లో నాగమ్మ ముందుకు సాగుతున్నారు.

అప్పటి ఉప ముఖ్యమంత్రి దామోదర్ నర్సింహా చేతుల మీదుగా రాష్ట్రస్థాయి ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలు అవార్డును అందుకుంటున్న నాగమ్మ

జిల్లాస్థాయి ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలి అవార్డును అప్పటి మంత్రి డీకేఅరుణ చేతుల మీదుగా అందుకుంటున్న నాగమ్మ

అవార్డు రావడం ఆనందంగా ఉంది: నాగమ్మ

● నాగమ్మ

జాతీయస్థాయిలో ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలిగా అవార్డు రావడం ఎంతో ఆనందంగా ఉంది. ఈ అవార్డు వస్తుందని ఊహించలేదు. విద్యతోనే దేశాభివృద్ధి అనే లక్ష్యంతో విద్యను అభ్యసించే వారికి చేయూత నందిస్తూ విద్యను బోధిస్తున్నాను. తనుబోధించిన విద్యార్థులు నేడు ఎదిగి దేశ, విదేశాల్లో రాణించడం హర్షించదగ్గ విషయం. విద్యతో పాటు విద్యార్థుల్లో నైతిక విలువలను పెంపొందించేందుకు కృషిచేస్తున్నాను. జాతీయస్థాయి అవార్డు రావడంతో తనపై మరింత బాధ్యత పెరిగింది. విద్యార్థులను ఉత్తమ ప్రయోజకులుగా తీర్చిదిద్దడమే ధ్యేయంగా ముందుకు సాగుతూ సామాజిక సేవ కార్యక్రమాలు విస్తృత పరుస్తాం.

గతంలో పొందిన అవార్డులు:

- 2009-10లో ఇంటర్ నేషనల్ లయన్స్‌క్లబ్ జిల్లా 324 నుంచి ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలి అవార్డును హైదరాబాద్‌లో నాగపతిశర్మ చేతుల మీదుగా అందుకున్నారు.
- 2011-12 విద్యాసంవత్సరానికి గాను జిల్లా ఉత్తమ ఉపాధ్యాయ అవార్డును మంత్రి డీకే అరుణచేతుల మీదుగా అందుకున్నారు.
- 2012- 13 విద్యా సంవత్సరానికి గాను రాష్ట్రస్థాయి ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలి అవార్డును హైదరాబాద్‌లో అప్పటి ఉప ముఖ్యమంత్రి దామోదర రాజ నర్సింహా చేతులమీదుగా అందుకుంది.
- 2013- 14 సంవత్సరానికి గాను ఇందిరాగాంధీ సంయుక్త సంస్థ ప్రాయోజిత గోల్డ్ మెడల్ అవార్డును అంతర్జాతీయ ఐక్యరాజ్య సమితి మానవహక్కుల కమిటీ మాజీ అధ్యక్షుడు జస్టిస్ టీపీ భగత్, మాజీ ఎన్నికల అధికారి కృష్ణమూర్తి చేతులమీదుగా ఢిల్లీలోని కృష్ణ విజ్ఞాన్ భవన్‌లో అవార్డును అందుకుంది.
- 2013లో సర్వేపల్లి రాధాకృష్ణ వాలంటీర్ ఆర్గనైజేషన్ వారిచే రాష్ట్రస్థాయి ఉత్తమ అధ్యాపక అవార్డును అందుకుంది.
- ప్రభుత్వం చేపట్టిన వివిధ పథకాల్లో తన సేవలకు అందించిన ప్రశంసాపత్రాలు, అవార్డులను అందుకున్నారు.

● జాతీయస్థాయి ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలిగా నాగమ్మ ఎంపిక

బోధన వినూత్నం..

ప్రతిభకు పురస్కారం

● ఫలితాలు, ప్రదర్శనల్లో సత్తాచాటుతున్న డీపీఎం విద్యార్థులు

నారాయణపేటకు చెందిన గౌరమ్మ, అబ్బప్ప దంపతుల కుమార్తె నాగమ్మ. పేటలోని వైదిక, బాలికల ఉన్నత పాఠశాలలో విద్యాభ్యాసం పూర్తిచేసింది. ఇంటర్మీడియట్ చదువుతుండగా 1978 సంవత్సరంలో 20 మంది విద్యార్థులు, ఉపాధ్యాయురాలిగా నాగమ్మతో దయానంద విద్యామందిర్ పాఠశాలను స్థాపించారు. ఓ వైపు ఉన్నత విద్యనభ్యసిస్తూనే.. మరోవైపు విద్యార్థులను చదువులో తీర్చిదిద్దారు. 1985లో డీపీఎం పాఠశాల ప్రభుత్వ ఎయిడెడ్ పాఠశాలగా ఎంపికైంది.

అప్పటి ఉప ముఖ్యమంత్రి దామోదర రాజనర్సింహ చేతుల మీదుగా రాష్ట్రస్థాయి ఉత్తమ అవార్డు అందుకుంటున్న నాగమ్మ

జిల్లాతో నుంచి జాతీయస్థాయికి..

జిల్లా, రాష్ట్ర జాతీయస్థాయిలో పాఠశాల విద్యార్థులు ఎన్నో బహుమతులను సాధించారు. వ్యాసరచన, ఉపన్యాస, క్రీడా పోటీల్లో సైతం లెక్కనేనన్ని బహుమతులు గెల్చుకున్నారు. వీటన్నింటిని సాధించడంలో పాఠశాలకు చెందిన ఎస్జీటీ ఉపాధ్యాయురాలు నాగమ్మ మార్గదర్శకులుగా పనిచేశారు. ఆమె సేవలను గుర్తించిన ప్రభుత్వం 2011లో జిల్లా స్థాయి ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలిగా ఎంపికచేసింది. అప్పటి జిల్లా మంత్రి డీకే అరుణ చేతుల మీదుగా నాగమ్మకు ఉత్తమ ఉపాధ్యాయ అవార్డును అందచేశారు.

● 2012లో రాష్ట్రస్థాయి ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలి అవార్డు ఆమెను వరించింది. అప్పటి ఉపముఖ్యమంత్రి దామోదర రాజనర్సింహ చేతుల మీదుగా అవార్డు అందుకున్నారు.

● 2014లో అంతర్జాతీయ ఇందిరాగాంధీ ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలిగా ఎంపికై ఐక్యరాజ్యసమితి మానవ హక్కుల కమిటీ మాజీ అధ్యక్షుడు, కమిటీ చైర్మన్ పీఎస్ భగవతి చేతుల మీదుగా అవార్డును అందుకొన్నారు.

● లయన్స్‌క్లబ్ ఇంటర్నేషనల్ డిస్ట్రిక్ట్ ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలిగా నాగమ్మ ఎంపికై మాజీ నాగభూషణమ్మ చేత అవార్డును పొందారు.

● ప్రభుత్వం బుధవారం ప్రకటించిన జాతీయస్థాయి ఉత్తమ ఉపాధ్యాయుల జాబితాలో రాష్ట్రంలోని ఏడుగురిలో నారాయణపేట ప్రభుత్వ ఎయిడెడ్ దయానంద విద్యా మందిర్ ఉన్నత పాఠశాలలో ఎస్జీటీ ఉపాధ్యాయురాలు నాగమ్మ ఉండటం గమనార్హం.

ఫలితాల్లో సత్తాచాటడం.. వైజ్ఞానిక ప్రదర్శనలతో నైపుణ్యాన్ని బయటపెట్టడం.. సాంస్కృతిక కార్యక్రమాలతో ఔరా అనిపించడం.. ఇదీ దయానంద విద్యా మందిర్ విద్యార్థుల ప్రతిభ.. వీరి వెనకుండి, వెన్నుతట్టి ప్రోత్సహిస్తూ అన్నీ తానై పాఠశాలను ముందు వరుసలో నిలబెడుతూ అవార్డులు అందుకుంటున్న డీపీఎం ఉపాధ్యాయురాలు నాగమ్మ బుధవారం జాతీయస్థాయి ఉత్తమ ఉపాధ్యాయ అవార్డుకు ఎంపికైంది.. వృత్తిలో ముప్పై ఏళ్లుగా విద్యార్థుల ఉన్నతికి కృషి చేస్తూ ఎన్నో ప్రశంసలు అందుకున్నారు. ఆమెపై 'న్యూస్‌టుడే' ప్రత్యేక కథనం..

\- న్యూస్‌టుడే, నారాయణపేట గ్రామీణం

● 2011లో డీపీఎం పాఠశాల విద్యార్థుల ఆటోమేటిక్ రైల్వేగేట్ ప్రదర్శనకు జిల్లా, రాష్ట్రస్థాయిలో బహుమతులు

● 2012-13లో కాలుష్య రహిత వాహక నౌకయాన వైజ్ఞానిక ప్రదర్శనకు జిల్లాస్థాయిలో ప్రథమ బహుమతి

● 2014లో చెన్నైలో జరిగిన దక్షిణ భారత దేశ స్థాయిలో ప్రదర్శనలో మురుగు నీటితో విద్యుదుత్పత్తి ప్రదర్శన

● 2015లో ఢిల్లీలో జరిగిన జాతీయస్థాయి ప్రదర్శనలో సెల్‌ఫోన్‌తో దొంగలను పట్టుకోవడం ప్రదర్శనకు పలువురు ప్రశంసలు అందుకున్నారు. వీటితోపాటు వివిధ డివిజన్, జిల్లాస్థాయి ప్రదర్శనల్లో పాఠశాల బహుమతులు గెలుచుకుంది.

అందరి సహకారంతోనే..

నా సొంతంగా విద్యాభివృద్ధికి కృషిచేస్తున్నా.. యాజమాన్యం సహకారంతో ఉపాధ్యాయ వృత్తిలో రాణిస్తున్నా. జాతీయస్థాయిలో ఉత్తమ ఉపాధ్యాయ అవార్డు రావడం ఆనందంగా ఉంది. ఉపాధ్యాయురాలిగా పనిచేస్తున్నప్పటి నుంచి విద్యార్థులకు ఎలా చెబితే వింటారో.. చదువుపై శ్రద్ధ ఎలా కనబరుస్తారో పరిశీలిస్తూనే ఆటపాటలతో విద్యాబోధన చేశాం. పాఠశాలలో చదివిన విద్యార్థులు దేశ, విదేశాల్లో మంచి ఉద్యోగాల్లో స్థిరపడ్డారు. సమయం లభించినప్పుడు కుటుంబ సభ్యులతో పాఠశాలకు వచ్చి పరిచయం చేయడం మరింత ఆనందాన్నిస్తుంది.

\- నాగమ్మ, ఉపాధ్యాయురాలు, నారాయణపేట

श्रावणी मास में बृहद यज्ञों का आयोजन कर

पौधा लगाएं

घर-घर में यज्ञ के आयोजन के साथ पौधा लगाने को प्रेरित करें

पेड़-पौधे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है शुद्ध वायु और वर्षा के लिए महायज्ञों के साथ पेड़ लगाए

समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों, गुरुकुलों के संचालकों, शिक्षण संस्थाओं तथा युवा संगठनों से अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का आह्वान किया

ఆర్యసమాజ్ నారాయణపేట్ ఆధ్వర్యంలో నిర్వహించబడుచున్న దయానంద విద్యామందిర్ ఉన్నత పాఠశాల ఉపాధ్యాయిని సుశ్రీ నాగమ్మ గారికి జాతీయ ఉత్తమ ఉపాధ్యాయ అవార్డు లభించినది. 5వ సెప్టెంబరు 2015 నాడు ఢిల్లీలో రాష్ట్రపతి ప్రణబ్ ముఖర్జీ చేతులమీదుగా ఈ గౌరవాన్ని రూ॥ 50,000/- నగదుతో బాటు అందుకోబోతున్నారు

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-09s-2015 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, D.No. 4-2-15
మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95,
Arya Pratinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad -95
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

सभा के नए प्रकाशन

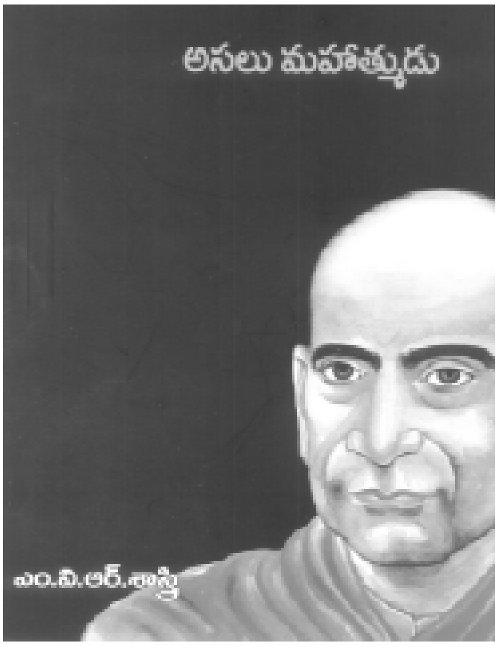

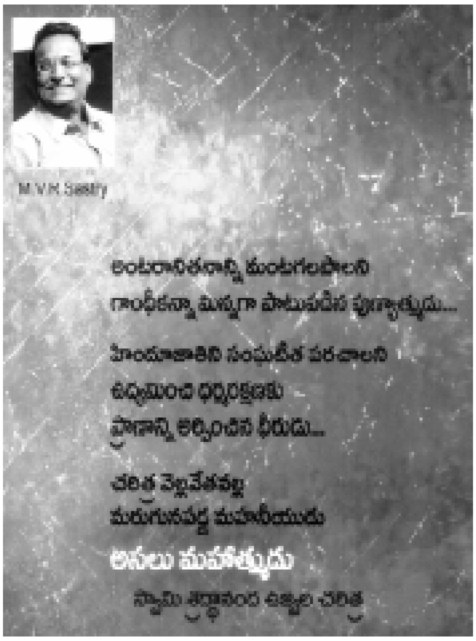

A book on Swami Shradhanand ji and political analysis of the then time Price Rs. 150/- per copy but it is available on concessional rate. only for Rs. 100/- per copy from Arya Pratinidhi Sabha Office,Sultan Bazar, Hyderabad

सन्ध्या अग्नि होत्र विधि पुस्तक का हिन्दी और तेलुगु में अलग-अलग डबल कलर में सभा ने प्रकाशित करवाया हैं। हिन्दी रू. 120/-में 10 प्रति और तेलुगु पुस्तक रू. 100/- में 10 प्रति सभा कार्यालय से प्राप्त की जा सकती । अधिक संख्या में मंगवाकर याज्ञिक प्रक्रिया को व्याप्त करने में अपनी भागीदारी निभाएं । आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाजार, हैदराबाद । सभा के अगले प्रकाशन : संस्कार विधि हिन्दी और तेलुगु में विवरण सहित तुरन्त प्रकाशत की जा रही है । लागत मूल्य पर पाठकोंके समक्ष उपस्थित की जाएगी । अभी से मंगवाने वालों के लिए मूल्य में 50 प्रतिशत छूट दी जाएगी ।

వైదిక పంచ మహాయజ్ఞ విధి (తెలుగులో) పునః ప్రచురణ రూ॥ 100/- లకు 10 పుస్తకాలు. ఇదే విధంగా హిందీలో కూడ డబుల్ కలర్‌లో వైదిక సంధ్యా అగ్నిహోత్ర విధి పుస్తకమును ప్రచురించడం జరిగినది. వేల రూ॥ 20/- కాని ఎక్కువ సంఖ్యలో తీసుకున్న వారికి రూ॥ 12/- చొప్పున ఇవ్వబడును. అధిక సంఖ్యలో తెప్పించుకుని వేదప్రచారానికి తోడ్పడగలరు.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor: VithalRao Arya acharyavithal@gmail.com
సంపాదకులు : విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95 Ph.No. 24753827,Email : acharyavithal@gmail.com
संपादकः श्री विट्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-९५